



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 38] नई दिल्ली, शनिवार, सितम्बर 17, 1994 (भाद्रपद 26, 1916)
No. 38] NEW DELHI, SATURDAY, SEPTEMBER 17, 1994 (BHADRA 26, 1916)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	पृष्ठ 719	भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों जिनमें (सामान्य स्वरूप को उपविधिया भी शामिल हैं) के द्वितीय अधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	पृष्ठ *
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	865	भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	3	भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, निवृत्त और महानेखा-परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबंध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	901
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	1697	भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और विज्ञापनों में संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	831
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*	भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग II—खण्ड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*	भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	3959
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*	भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	125
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*	भाग V—घरेलू और द्वितीय दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को बताने वाला अनुपूरक	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*		

CONTENTS

	PAGE		PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court.	719	PART II —SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court.	865	PART II —SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	3	PART III —SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	901
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	1697	PART III —SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	831
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations		PART III —SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations		PART III —SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	3959
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills		PART IV —Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies.	125
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)		PART V —Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi.	
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)			

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 1994

सं० 141-प्रेज 94-राष्ट्रपति, हवलदार मदन सरूप को उनके उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्यों के लिए उन्हें कीर्ति चक्र प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

3971721 हवलदार मदन सरूप, डोगरा (मृगोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 अक्टूबर 1993)

11 अक्टूबर, 1993 को 7 डोगरा ने वारामूला जिले के पाँच गांवों में उग्रवादियों को घेरने और उन्हें खोजने की कार्यवाही की। लगभग राधा छह बजे प्रातः जब "ए" कंपनी अदपाल गांव में प्रवेश कर रही थी तो उन्होंने सामान्य क्षेत्र में गोणकार की ऊंची पहाड़ियों पर अदपाल के दक्षिण पश्चिम में उग्रवादियों के दल को देखा। तत्काल उन उग्रवादियों का रास्ता रोकने और उन्हें पकड़ने के लिए हवलदार मदन सरूप के नेतृत्व में सैनिकों का दल भेजा गया।

हवलदार मदन सरूप अपने जवानों की टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए गोणकार पहाड़ी पर चढ़ने लगे। पाँच उग्रवादी बेहतर स्थिति में थे अतः उन्होंने तत्काल जवानों की टुकड़ी पर म्वचालित गस्तों से अचूक और भारी गोलीबारी शुरू कर दी। हवलदार मदन सरूप, उच्चकोर्ट के नेतृत्व और असाधारण साहस का परिचय देते हुए उग्रवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बीच आगे बढ़े और अकेले ही दो उग्रवादियों को मार गिराया। बाकी बचे उग्रवादियों ने गोलीबारी तेज कर दी परन्तु इसकी परवाह न करते हुए वे उन उग्रवादियों के दिखते मोर्चा लेने वाले अपने जवानों का नेतृत्व करने रहे। उग्रवादियों की ओर आगे बढ़ते हुए हवलदार मदन सरूप ने एक तीव्र उग्रवाद को भी मार गिराया। परन्तु एक अन्य उग्रवादी की गोली से वे जखमी हो गए। अपनी चोट की तकिक भी परवाह न करते हुए और अति असाधारण वीरता का परिचय देते हुए वह बहादुर गैर-कमीशन प्राप्त अपसर उग्रवादियों की ओर बढ़ता रहा तथा अपने हथियार में बची अंतिम गोली से चौथे उग्रवादी को भी मार गिराया। दोनों पक्षों की ओर से हुई गोलीबारी में

हवलदार मदन सरूप की छाती में एक और गोली आ लगी परन्तु उन्होंने ऊपर की ओर भाग रहे पाँच उग्रवादी की तरफ बढ़ता जारी रखा। लॉस नायक बुद्धि सिंह ने इस अंतिम उग्रवादी का पीछा करके उसे मार गिराया। लगभग सात बजे हवलदार मदन सरूप की घावों के कारण मृत्यु हो गई। उनके असाधारण नेतृत्व, अदम्य साहस और उच्चकोर्ट की आत्म बलिदान की भावना के परिणामस्वरूप पाँच दुर्घात उग्रवादी मारे गए और भारी गोलाबारूद, मैगजीन और हथगोनों सहित पाँच ए० के-47/56 राइफलें बरामद हुई।

इस प्रकार हवलदार मदन सरूप ने उत्कृष्ट वीरता, दुष्ट निश्चय का परिचय दिया और सर्वोच्च बलिदान किया।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 142-प्रेज 94-राष्ट्रपति कैप्टन सुरेश राधाकृष्णन को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए उन्हें "शौर्य चक्र का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

कैप्टन सुरेश राधाकृष्णन (आई सी०-50127), शौर्य चक्र राजपूताना राइफल।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 सितम्बर, 1993)।

राजपूताना राइफल की 11 बटालियन को 23 सितम्बर, 1993 को जम्मू एवं कश्मीर के वारामूला जिले में अथाबुत गांव की घेराबन्दी करने और तलाशी लेने का कार्य सौंपा गया था। यह गांव तीन ओर में पहाड़ों और घने जंगल से घिरा हुआ है। इस गांव तक पहुँचने और अलग-अलग दिशाओं में एक साथ उसकी घेराबन्दी करने के लिए सैनिकों को चार घण्टे पैदल चलना पड़ा। यह घेराबन्दी उसी दिन 0915 बजे प्रभावी होनी थी। 0915 बजे के आसपास कैप्टन सुरेश राधाकृष्णन ने लगभग 500 मीटर की दूरी पर सशस्त्र उग्रवादियों का एक दल देखा जो घेराबन्दी में निकल भागने के

प्रयास में एक नाले से होकर आगे बढ़ रहा था। कैप्टन सुरेश राधाकृष्णन अपने दल के साथ नाले में उग्रवादियों के पीछे भागे जो रुक-रुक कर उन पर गोलियां चला रहे थे। वे उग्रवादियों के निकट पहुंच गए और भागते हुए उग्रवादियों को चेतावनी देकर उन्हें समर्पण करने के लिए कहा लेकिन इसके जवाब में उग्रवादियों ने गोलियों की बौछार की। ऐसा करने पर उग्रवादियों और सैन्य टुकड़ी के बीच भारी गोलीबारी हुई। दो उग्रवादी वहीं मारे गए जिनके बारे में बाद में पता चला कि वे प्रतिबंधित जेहाद फॉर्स के उग्रवादी हैं जिन्हें पाकिस्तान में प्रशिक्षण दिया गया था। उसी समय अन्य तीन उग्रवादियों ने, जो अभी भी चट्टानों के पीछे से गोलियां चला रहे थे, कैप्टन सुरेश राधाकृष्णन के दल की ओर छः ग्रेनेड फेंकी जिनके टुकड़ों से उन्हें और छः अन्य सैनिकों को बहुत सी चोटें आईं। ग्रेनेड के टुकड़ों से आई बहुत सी चोटों से न घबराते हुए और अत्यधिक रक्तस्राव होने के बावजूद कैप्टन राधाकृष्णन ने उग्रवादियों पर एक ग्रेनेड फेंका और अपनी सुरक्षा की कतई परवाह न करते हुए उस चट्टान की ओर रेंगते लगे। वहां से उन्होंने अकेले ही दो उग्रवादियों को मार गिराया। कैप्टन सुरेश राधाकृष्णन के इस कार्य से उनके आदर्शियों को रेंगकर आगे जाने तथा अन्य उग्रवादियों को घेरने की प्रेरणा मिली जिससे दो और उग्रवादी मारे गए और गोला-बारूद एवं विस्फोटकों की भारी मात्रा के साथ ए० के०-56 राइफल बरामद हुई।

इस प्रकार, कैप्टन सुरेश राधाकृष्णन, शौर्य चक्र ने साहसिक कार्य तथा सच्चे नेतृत्व का परिचय दिया।

गिरीश प्रधान
निदेशक

सं० 143-प्रेज 94—राष्ट्रपति निम्नलिखित अफसरों/कर्मिकों/व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए उन्हें “शौर्यचक्र” प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्रीमती अमरीक कौर,
अमृतसर,
पंजाब।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 सितम्बर, 1991)

2 मई, 1990 की रात को पौने बारह बजे उग्रवादियों के चार दलों ने मिलकर श्रीमती अमरीक कौर के घर पर राकेट लांचरों, हैंड-ग्रेनेडों, बमों और कई अग्नि शस्त्रों से हमला किया। श्रीमती अमरीक कौर और उनके परिवार के सदस्यों ने अपनी आत्मरक्षा करने के लिए उग्रवादियों पर गोलियां चलाई और उग्रवादियों का हमला रोकने के लिए लग घंटे तक मुकाबला किया। उग्रवादियों द्वारा की गई बमबारी, हैंड ग्रेनेडों और गोलीबारी से श्रीमती अमरीक कौर, उनकी पुत्री एवं उनके पुत्र घायल हो गए।

12 सितम्बर, 1991 को, श्रीमती अमरीक कौर के पति उनका पुत्र श्री निशान सिंह और उनका नौकर श्री मुस्तार सिंह अपने खेत जोतकर ट्रैक्टर में घर लौट रहे थे। श्रीमती अमरीक कौर अपने अंगरक्षक के साथ जीप पर उनके पीछे पीछे आ रही थीं। उसी समय झाड़ियों में छिपे हुए उग्रवादियों ने श्रीमती अमरीक कौर के पति श्री सुबेग सिंह और उनके नौकर श्री मुस्तार सिंह पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। यद्यपि श्रीमती अमरीक कौर के पुत्र श्री निशान सिंह किसी प्रकार से उग्रवादियों के आक्रमण से बच निकले तथापि अनजाने में पकड़े गए श्री सुबेग सिंह और श्री मुस्तार सिंह को उग्रवादियों ने मार डाला। तभी से श्रीमती अमरीक कौर उग्रवादियों का निरंतर मुकाबला कर रही हैं। इन्होंने अब तक 18 अपेक्षित उग्रवादियों को मार गिराया है और 24 खूंखार उग्रवादियों को पुलिस के सामने आत्म-समर्पण करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार कुल मिलाकर इन पर उग्रवादियों ने 26 बार हमला किया, और इन्होंने अपने अदम्य साहस से उन पर हमलों का मुकाबला किया।

इस प्रकार श्रीमती अमरीक कौर ने अदम्य साहस दिखाते हुए और अपनी जान की परवाह किए बिना उग्रवादियों का मुकाबला करने में उत्कृष्ट भावना का परिचय दिया।

2. श्री कौशिक चटर्जी,
चीफ इंजीनियर अफसर,
एम० टी० जाकिर हुसैन (मरणोपरांत)
3. श्री सूर्यम दुबूरी,
तृतीय इंजीनियर अफसर,
एम० टी० जाकिर हुसैन (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 नवम्बर, 1991)।

14 नवम्बर, 1991 की सुबह एम० टी० जाकिर हुसैन पोत के एक खाली केबिन में आग लग गई। आग इतनी तीव्र गति से फैली कि पूरा पोत आग की चपेट में आ गया। जब पोत अधिकारी और चालक बाहरी आवास स्थल से आग बुझाने में लगे हुए थे तो मुख्य अभियंता अधिकारी श्री कौशिक चटर्जी, तृतीय अभियंता अधिकारी श्री सूर्यम दुबूरी के साथ स्थिति की गंभीरता महसूस करते हुए तथा अपने जीवन के गंभीर जोखिम के बावजूद जतरेंटर व फायर पंप चालू करने के लिए फनल द्वार के रास्ते नीचे इंजन कक्ष में पहुंच गए, ताकि पोत कार्मिक प्रभावकारी तरीके से आग वृद्धासकें। समय पर फायर पंप चालू करने से अग्नि-शमन कार्य में भारी योगदान मिला। दुर्भाग्यवश, वे आग और उसकी भभक से घिर गए, जिससे इंजन कक्ष से बाहर नहीं निकल पाए। और अपने कर्तव्य का पालन करते हुए दोनों वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार श्री कौशिक चटर्जी और श्री एम० दुबूरी ने पोत में लगी भीषण आग को बुझाने का अथक प्रयास करते

हुए, कर्मव्य परायणता तथा अदम्य साहस का परिचय दिया और इस कार्य में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

4. 2681133 ग्रेनेडियर मुखेन्द्र सिंह भगेल,
ग्रेनेडियर्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 सितम्बर, 1992)

15 ग्रेनेडियर्स तथा 24 राजपूत के सैनिकों ने 26 सितम्बर, 1992 को जम्मू तथा कश्मीर घाटी के बरसुन गांव में संयुक्त रूप से एक घेराबन्दी तथा खोज का कार्य किया। जैसे ही दोनों सैन्य टुकड़ियां बरसुन गांव के दक्षिण भाग के आस-पास पहुंची तो दो मकानों में उग्रवादियों ने उन पर स्वचालित हथियारों तथा आर० पी० जी०-7 मेगोलीबारी की। इनमें से एक मकान एक मंजिला तथा मक्की के खेत में लगा हुआ था। इस क्षेत्र की तत्काल घेराबन्दी की गई।

ग्रेनेडियर मुखेन्द्र सिंह भगेल तुरन्त कार्रवाई दल के एक अंग थे। भारी गोलीबारी की चपेट में आने पर कंपनी कमांडर ने अपने दल को दो समूहों में बांट दिया। ग्रेनेडियर मुखेन्द्र सिंह भगेल को उन सैनिकों को कवर फायर प्रदान करने का कार्य सौंपा गया जो एक मंजिले मकान पर आक्रमण कर रहे थे। दूसरे मकान से हो रही गोलीबारी का सामना 24 राजपूत रेजिमेंट के सैनिक कर रहे थे। जैसे ही कंपनी तुरन्त कार्रवाई दल एक खुले स्थान से उस एक मंजिले मकान की ओर बढ़ा तो वह निकटवर्ती मक्के के खेत तथा उस मकान से होने वाली भारी स्वचालित तथा आर पी जी-7 की गोलीबारी की चपेट में आ गया। खेतों तथा मकानों से होने वाली गोलीबारी के कारण यह स्थिति उस समय गंभीर हो गई जब 24 राजपूत रेजिमेंट का एक सैनिक मारा गया तथा सात घायल हो गये और 15 ग्रेनेडियर्स के तुरन्त कार्रवाई दल का आगे बढ़ना रुक गया। ग्रेनेडियर मुखेन्द्र सिंह भगेल ने देखा कि पास ही एक उग्रवादी है। उन्होंने रेंगकर उस उग्रवादी तक पहुंचकर उसे धर दवांचा तथा तलवार की भिड़ंत से उसे मार डाला। जब ग्रेनेडियर मुखेन्द्र सिंह भगेल स्वयं को इस उग्रवादी से छुड़ा रहे थे तब उन पर दूसरे मकान से गोलीबारी हुई जिससे गोलियों के कारण उनके सीने तथा सिर में गंभीर चोटें लगीं जिसके कारण वे वीरगति को प्राप्त हो गए। बाद में पता चला कि मारा गया उग्रवादी अफगान मुजाहिदीन था।

इस प्रकार ग्रेनेडियर मुखेन्द्र सिंह भगेल ने उत्कृष्ट साहस प्रदर्शित किया और सर्वोच्च बलिदान किया।

5. श्री हरपाल सिंह,
संबलपुर,
उड़ीसा।

6. श्री अमरजीत सिंह,
संबलपुर,
उड़ीसा।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 दिसम्बर, 1992)

आरक्षण के मुद्दे पर सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ विरोध प्रकट करते हुए 25-30 छात्रों ने 8 दिसम्बर, 1992 को उड़ीसा राज्य सड़क परिवहन की एक बस में आग लगा दी। इस बस के चालक और परिचालक शोधोन्मत्त छात्रों की भीड़ देखकर बस को छोड़ कर वहां से भाग गए। जब उत्तेजित छात्र इस बस को आग लगा रहे थे तो श्री हरपाल सिंह और उनके भाई श्री अमरजीत सिंह जो अपने काम से स्कूटर पर कहीं जा रहे थे, ने इस घटना को देखा। छात्रों ने बस की विंड शील्ड और खिड़कियों के शीशे तोड़ दिए थे, और उन्होंने बस की सीटों को भी आंशिक रूप से जला दिया था। ये दोनों युवक भारी वाहन चलाना जानते थे अतः इन्होंने अपने जीवन को खतरे में डालकर पहल की, आग बुझाई और छात्रों के उग्र विरोध, के बावजूद बस को एंथापल्ली पुलिस स्टेशन ले जाकर उसे क्रूर छात्रों से बचा लिया। श्री हरपाल सिंह और उनके भाई ने अपनी जान को जोखिम में डालकर किए गए इस वीरतापूर्वक कार्य से वह भीड़ बस को न जला पाई और इस प्रकार संपत्ति की क्षति होने से बच गई।

इस प्रकार श्री हरपाल सिंह और श्री अमरजीत सिंह ने पहल, साहस और उत्कृष्ट नागरिक भावना का परिचय दिया तथा सरकारी संपत्ति को पूर्णतः नष्ट होने से बचा लिया।

7. स्ववाइन लीडर देवेन्द्र सिंह जैन, (15016),
उड़ान (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 फरवरी, 1993)

स्ववाइन लीडर देवेन्द्र सिंह जैन जगुआर स्ववाइन की तैनाती नफरी में थे।

17 फरवरी, 1993 को वायसेना स्टेशन, जोधपुर में एक स्ववाइन की टुकड़ी का संचालन करते समय वायुयान की उड़ान शुरू होने के समय उन्होंने परिसर के देहों के बाहर की तरफ एक मिग-21 बिस वायुयान देखा। परन्तु उसमें विमान चालक को नहीं देखा। इसकी सूचना रेडियो पर तुरन्त वायु यातायात नियंत्रण को दी। वे अपने वायुयान को बन्द करके बाहर कूद कर तार की दोहरी बाड़ और बाड़ के पाम लंबातब भरे सीवर के नाले को फाद कर दुर्घटना स्थल की ओर भागे। इस दुर्घटना स्थल पर पहुंचने वाले वे पहले वायुसेना कर्मिक थे। दुर्घटनाग्रस्त वायुयान के बिखरे हुए ईंधन के कारण मुसलमान मलबे के आग लगने के जोखिम के बावजूद स्ववाइन लीडर जैन ने एक सिविलियन को साथ लेकर उस असमर्थ पायलट को मलबे के नीचे से निकाला और प्राथमिक चिकित्सा सहायता प्रदान की। तब उन्होंने बचाव हेलिकाप्टर के उतरने के लिए स्थान का चयन किया तथा वह स्थान खाली करवाया, कर्मिदल को सुरक्षित रूप से उतरने के लिए व्यवस्था की और घायल पायलट को हेलिकाप्टर में बिठाने में सहायता प्रदान की।

इस प्रकार स्वाइन लीडर देवेन्द्र सिंह जैन ने दुर्घटनाग्रस्त वायुयान से निकलती हुई / लगती हुई आग से अपने साथी अफसर को बचाने में असाधारण प्रयत्नरन्तात्मक स्थिति संबंधी सतर्कता और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

8. 13736095 हवलदार प्रताप सिंह,

जम्मू तथा कश्मीर राइफल (यरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 जून, 1983)

11 जून, 1993 को 08 जम्मू तथा कश्मीर राइफल के एक जूनियर कमीशन प्राप्त अफसर और 22 अन्य रैंकों का तुरन्त कार्रवाई दल जम्मू तथा कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में पंजगाम से बिलगाम की ओर जा रहा था। दुहोम गांव के पास लगभग 0915 बजे यह दल घात लगाकर छिपे हुए लगभग 30 उग्रवादियों और कुछ कट्टर कश्मीरी उग्रवादियों की भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया।

जिस समय तुरन्त कार्रवाई दल, हमले की चपेट में आया उस समय हवलदार प्रताप सिंह दल के सबसे आगे वाले वाहन को चला रहे थे। उग्रवादियों की आरंभिक गोलीबारी में दो अन्य रैंक घायल हो गए। उस समय यूनिवर्सल मशीनगन से की जा रही गोलीबारी को रोकने के लिए किसी प्रकार की कार्रवाई किए जाने से काफी सैनिक हताहत हो सकते थे। इस नाजुक स्थिति को भांपते हुए हवलदार प्रताप सिंह ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना उग्रवादियों पर यूनिवर्सल मशीनगन से तुरन्त गोलियां चलाकर जवाबी हमला कर दिया। छाती में गोली लगने से घायल होने के बावजूद हवलदार प्रताप सिंह इसकी परवाह किए बिना उग्रवादियों पर गोलीबारी करते रहे और उनमें से दो उग्रवादियों को मार गिराया तथा यूनिवर्सल मशीनगन बंद कर वीरगति प्राप्त करने से पहले एक ए० के०—56 राइफल बरामद करने में कामयाब रहे। बाद में उग्रवादियों की रैडियो संचार-व्यवस्था भंग हो जाने से पता चला कि मारे गए उग्रवादी पाकिस्तानी नागरिक थे। उस बहादुर सैनिक के साहसी कार्य से प्रेरणा पाकर उनके दल के अन्य सैनिकों ने उग्रवादियों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले को नाकाम कर एक और उग्रवादी को मार गिराया तथा उनसे गोलाबारी के अलावा एक आर० पी० जी०, एक यूनिवर्सल मशीनगन व राइफलें बरामद कीं। हवलदार प्रताप सिंह के उक्त वीरतापूर्ण कार्य से न केवल उग्रवादियों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले को नाकाम कर उन्हें खदेड़ने में मदद मिली अपितु उनके बहुत से साथी सैनिकों की जान भी बच गई।

इस प्रकार हवलदार प्रताप सिंह ने असाधारण वीरता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए सर्वोच्च बलिदान किया।

9. मोहम्मद सुब्रती,

दिल्ली।

(यरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 जून, 1993)

अग्नेयास्त्रों से लैस पांच डाकुओं ने 27 जून, 1993 को दिन में लगभग एक बजे गनी हीगा बेग, तिलक बाजार, दिल्ली में श्री दयानंद गुप्ता के मकान नं० 2207 को लूट लिया। श्री गुप्ता की लड़की की चीख सुनकर उनके पड़ोसी मोहम्मद सुब्रती, जो उस समय अपने घर में खाना खा रहे थे, दीडकर श्री गुप्ता के मकान में गए और वहां से बाहर निकल रहे डाकुओं को रोककर उन्हें ललकारा। मोहम्मद सुब्रती ने अपनी जान को भारी जोखिम में डालकर उनमें से एक डाकू पर काबू पा लिया। डाकुओं ने अपने साथी को छुड़ाने के लिए मोहम्मद सुब्रती को गोली से मार दिया।

इस प्रकार मोहम्मद सुब्रती ने डाकू दों पकड़ने में असाधारण साहस का परिचय देकर उस कार्रवाई में अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान किया।

10. 13745038, लांस नायक कृष्ण सिंह,

जम्मू एवं कश्मीर राइफल।

(यरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 5 जुलाई, 1993)

यह सूचना प्राप्त होने पर कि उग्रवादियों का एक दल जम्मू एवं कश्मीर के कटवारी डेहस्क के सामान्य क्षेत्र में घुसपैट करने की कोशिश कर रहा है, इस इलाके की घेराबंदी कर और घुसपैटियों की खोज करके उन्हें समाप्त करने के लिए कई गश्ती दल भेज गए। 1 जम्मू तथा कश्मीर राइफल के लांस नायक कृष्ण सिंह ऐसे ही उस गश्ती दल के सदस्य थे जिसका नेतृत्व सूबेदार सोम नाथ कर रहे थे।

5 जुलाई, 1993 को खोज कार्य के दौरान यह दल एक स्वचालित मशीनगन तथा ए.के.—56 राइफलों की भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया। उग्रवादियों के निकट पहुंचते समय सूबेदार सोम नाथ उनके द्वारा फेंके गए हथगोले से गंभीर रूप से घायल हो गए। यह देखकर लांस नायक कृष्ण सिंह अपनी राइफल से अंधाधुंध गोलियां बरसाते हुए आगे बढ़े और उन्होंने दो राष्ट्रविरोधी तत्वों को मार गिराया। फिर वे घायल सूबेदार सोम नाथ की ओर बढ़े। परन्तु वे उन तक पहुंच पाते, इससे पहले यूनिवर्सल मशीन गन की पोजिशन लिए हुए पीछे छिपे एक तीसरे उग्रवादी ने एक हथगोला फेंका जो लांस नायक कृष्ण सिंह के ठीक पीछे फटा जिसमें उनकी वही मृत्यु हो गई।

इस प्रकार लांस नायक कृष्ण सिंह ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए इस कार्रवाई में अपने साथी को सहायकता पहुंचाने के अपने साहसिक प्रयास में सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप सर्वोच्च बलिदान किया।

11. 13743718 लांस नायक,

नरेश कुमार,

(यरणोपरांत)

जम्मू तथा कश्मीर राइफल।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 जुलाई, 1993)

15 जुलाई, 1993 को जब लांस नायक नरेश कुमार जम्मू कश्मीर के बारामूला जिले के कियामतनक्षेत्र में ड्यूटी पर तैनात थे तो प्रातः लगभग सात बजकर बीस मिनट पर उन्होंने सात-आठ उग्रवादियों के एक दल को घेराबदी तोड़ने और पहाड़ी की तरफ दौड़ने का प्रयास करते देखा। जब ललकारे जाने पर भी वे उग्रवादी नहीं रुके तो लांस नायक नरेश कुमार ने तुरन्त कार्रवाई करते हुए पहले उग्रवादी पर गोलीबारी की जो उस समय तक लांस नायक नरेश कुमार के स्थान से 10 मीटर के भीतर आ गया था। उस उग्रवादी को गोली लगी तथा बाद में घावों के कारण उसकी मृत्यु हो गई। इसके तुरन्त बाद शेष उग्रवादी चट्टानों के पीछे छिप गए तथा गोलीबारी करने लगे। लांस नायक नरेश कुमार हवलदार लेख राज को साथ लेकर रेंगकर ऊपर चढ़े तथा उग्रवादियों के भागने के रास्ते को बंद करने में सफल हुए। फिर उन्हें एक आतंकवादी दिखाई दिया जो भागने के लिए धीरे-धीरे ऊपर से नीचे की ओर जा रहा था। लांस नायक नरेश कुमार ने उस उग्रवादी पर आक्रमण किया और उसे मार डाला। कुछ मिनटों के बाद सैनिकों ने एक घायल उग्रवादी की चीत्कार सुनी जो सैनिकों से उसका आत्मसमर्पण स्वीकार करने तथा उसकी जान बचाने की प्रार्थना कर रहा था। लांस नायक नरेश कुमार चुपचाप उग्रवादी के पास उसकी सहायता के लिए पहुंचे। उसी समय, एक छिपे हुए आतंकवादी ने निशकट से ए.के. राइफल से गोली चलाई। वह गोली लांस नायक नरेश कुमार के सीने में लगी। वे गिर पाड़े तथा कुछ मिनटों के बाद घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार लांस नायक नरेश कुमार ने उत्कृष्ट साहस का परिचय देते हुए सर्वोच्च बलिदान किया।

12. जी 036666-के० ओ० ई० एम०, (मरणोपरांत)
राम गोपाल सिंह।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 जुलाई, 1993)

ओ० ई० एम० राम गोपाल सिंह को नागालैंड में पंगरो-चोया-निमी मड़क पर डोजर की सहायता से भू-स्खलन को हटाने के कार्य पर तैनात किया गया था।

15 जुलाई, 1993 को लगभग मवा आठ बजे 53.850 कि०मी० पर हुए भारी भू-स्खलन के कारण सड़क अवस्था हो गई थी। ओ० ई० एम० राम गोपाल सिंह को अपने डोजर से भू-स्खलन हटाने का कार्य सौंपा गया था। अचानक एक अन्य भू-स्खलन हुआ जिसमें ओ० ई० एम० राम गोपाल सिंह फंस गए। घायल हो जाने पर भी उन्हें अपने डोजर को बचाने के लिए संघर्ष करने देखा गया। बाद में वे भू-स्खलन के मलबे और लुढ़कर गिरे पत्थरों के बीच दब गए। भू-स्खलन साफ करने के कार्य पर तैनात अन्य कार्मिकों ने मलबे में दबे ओ० ई० एम० राम गोपाल सिंह को जीवित बाहर निकालने के भारी प्रयास किए परन्तु कोई

लाभ नहीं हुआ और दुर्भाग्यवश उनकी जान नहीं बचाई जा सकी। परिणामस्वरूप ओ० ई० एम० राम गोपाल सिंह की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई परन्तु उन्होंने अंतिम सांस तक प्रयास करके डोजर को बचा लिया जिसमें केवल मामूली क्षति हुई थी।

इस प्रकार ओ० ई० एम० राम गोपाल सिंह ने सड़क पर यातायात की बहाली सुनिश्चित करने के लिए जीवन को जोखिम में डालकर अपना कार्य करते हुए उच्चतम बलिदान किया।

13. 411352, राइफलमैन, अतम राइफलमैन।

कृष्ण कुमार सिंह,

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 अगस्त, 1993)

राइफलमैन कृष्ण कुमार सिंह विशेष गश्ती दल के स्काउट का नेतृत्व कर रहे थे। इस गश्ती स्काउट को चहोंग खुनाओं के सामान्य क्षेत्र में नागालैंड राष्ट्रीय समाजवादी परिषद् के छिपने के स्थान पर हमला करने का कार्य सौंपा गया था। 16 अगस्त, 1993 को जब वे छिपे हुए विरोधियों पर हमला कर रहे थे, राइफलमैन कृष्ण कुमार सिंह के पैर में विरोधियों की गोलियां आ लगीं। इसके बावजूद राइफलमैन कृष्ण कुमार सिंह लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए अपने हथियार से गोलियां चलाते रहे। जब वे चलने में असमर्थ हो गए तो भूमि पर गिर पड़े और विरोधियों के ऊपर ही रही भूमिगत गोलीबारी की ओर रेंगते हुए जाते रहे। उन्हें एक गौर गोली आ लगी जिसने उन्हें पंगु बना दिया। वे दृढ़ता से विद्रोहियों के ऊपर गोली-बारी करते रहे और उन्होंने विद्रोहियों पर एक हथगोला फेंका। बाद में राइफलमैन कृष्ण कुमार सिंह गोली के घावों से वीरगति को प्राप्त हो गए।

राइफलमैन कृष्ण कुमार सिंह की इस कार्रवाई से एक भूमिगत विद्रोही पकड़ा गया और पांच हथियार तथा भारी मात्रा में गोलाबारूद और विस्फोटक सामग्री बरामद हुई।

इस प्रकार राइफलमैन कृष्ण कुमार सिंह ने विद्रोहियों के विरुद्ध लड़ाई में उत्कृष्ट साहस और दृढ़निश्चय का परिचय दिया तथा अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

14. मेजर वजिन्द्र सिंह साही,

(मरणोपरांत)

(आई० सी०-48397),

डोगरा।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अगस्त, 1993)

22 अगस्त, 1993 को 15 डोगरा रेजिमेंट के एक गश्ती दल को जंद दूदी रिज पर कुछ ऐसे पद-चिह्नों का पता चला जिनके सम्बन्ध में यह संदेह हुआ कि वे [हमारे क्षेत्र में प्रवेश कर रहे उग्रवादी हो सकते हैं। इस सूचना के आशय पर मेजर वजिन्द्र सिंह साही के नेतृत्व में तुरन्त

जवाबी कार्रवाई करने वाला दल जंद दूदी रिज पर प्वाइंट 3369 पर भेजा गया था ताकि राष्ट्रविरोधी तत्वों से संपर्क स्थापित किया जा सके। निर्धारित स्थान तक पहुंचने समय उनका दल उग्रवादियों की ओर से की जा रही भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया। मेजर साही ने स्थिति का जायजा किया और जवाबी गोलीबारी की। उग्रवादियों को खदेड़ने के लिए उन्होंने अपने दल के एक हिस्से को प्वाइंट 3369 के एक ओर से आगे बढ़ने को कहा तथा स्वयं दूसरे ग्रुप के साथ उस प्वाइंट की ओर आगे बढ़ने लगे ताकि उग्रवादियों को उस प्रबल स्थिति से मजबूरन हटना पड़े। हटने में रात्रि का अंधकार छा गया इसलिए खोज कार्य को रोक लिया गया किन्तु पूरी रातभर रुक-रुक कर गोलीबारी होती रही। 23 अगस्त को, पश्चिमी टाल की ओर से जहां पर राष्ट्रविरोधी तत्व विशाल शिलाखंडों के पीछे छिपे हुए थे, वहां से खोज-कार्य पुनः आरंभ किया गया। चनी झाड़ियों और प्राकृतिक पहाड़ियों की ओट में छिपे उग्रवादियों को वहां से हटना काफी कठिन कार्य था। तुरंत कार्रवाई दल निरंतर उन पर दबाव डालता रहा। दोपहर में खोजी-कुत्तों की सहायता से खोज कार्य शुरू करवाया गया। परन्तु छिप कर की जा रही गोलीबारी से आगे-आगे चल रहे दो स्काउट मारे गए तथा दरार के पीछे जिम उग्रवादी ने गोलियां चलाने की पोजीशन ले रखी थी उसे वहां से हटाया नहीं जा सका। उस समय आगे बढ़ना संभव नहीं था क्योंकि उससे यह दल दरार के पीछे छिपे हुए उग्रवादी की सीधी गोलीबारी के समक्ष आ सकता था। इसलिए 84 एम० एम० आर० एल० मंगवाई गई। आर० एल० के आने से पहले ही उस क्षेत्र में रात्रि का अंधकार छा गया और राष्ट्रविरोधी तत्व वहां से भाग न पाए, इसके लिए उस स्थान पर आग लगा दी गई। अगली सुबह, मेजर साही ने युक्तिपूर्वक ऐसी पोजीशन ली जिससे वे छिपे हुए उग्रवादी को उलझा सकें और उसे मार सकें। तदुपरांत खोज-कार्य शुरू किया गया और बड़ी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद किए गए। अब तक उग्रवादी तितर-बितर हो चुके थे और रिज के दोनों ओर घने जंगलों में छिप रहे थे। 25 अगस्त, 1993 को यह पता चला कि छह उग्रवादी घने जंगल में हैं। मेजर वजिन्द्र सिंह साही उत्तर दिशा से उन्हें खदेड़ने के लिए आगे बढ़े और दक्षिण से उन पर दबाव डाला गया ताकि उनके भागने का रास्ता अवरुद्ध किया जा सके। दो दिन बाद सभी 6 राष्ट्रविरोधी तत्व मार दिए गए। 13 दिन तक चली इस कार्रवाई में मेजर वजिन्द्र सिंह साही राष्ट्रविरोधी तत्वों पर अधिक दबाव डालते रहे जिसके परिणामस्वरूप उनमें से 18 राष्ट्रविरोधी तत्व मारे गए और उनसे बड़ी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद हुआ जिसमें 20 एक के 47/56 राइफलें, 3 यूनिवर्सल मशीन गनों, 4 स्प्रिंग राइफलें, 2 ग्रेनेड लांचर, 23 पिस्तौलें, 5 रेडियो सेट और 5000 राउंड से अधिक गोलाबारूद शामिल था। उग्रवादियों को भारी घुसपैट को रोकने की धुन में जब ये अफसर, 7 सितम्बर, 1993

को, नियंत्रण-रेखा के पास सुरंग खिटा रहे थे, तभी अकस्मात एक सुरंग में हुए विस्फोट से उनकी वहीं तत्काल मृत्यु हो गई।

इस प्रकार मेजर वजिन्द्र सिंह साही ने अदम्य साहस एवं अनुकरणीय नागरिक भावना का परिचय दिया तथा सेना की उच्च परंपरा के अनुयायी सर्वोच्च बलिदान किया।

15. 2784930, सिपाही,
रौधाल बाजीराव धर्मा, (मरणोपरांत)
मराठा लाइट इन्फैंट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 सितम्बर, 1993)

15 सितम्बर, 1993 को 6 मराठा लाइट इन्फैंट्री ने जम्मू एवं कश्मीर के नरबल गांव में घेराबंदी एवं खोज का कार्य शुरू किया। लगभग बारह बजे दोपहर में बी कंपनी का खोजी दल गांव के पश्चिमी छोर पर बने एक मकान की ओर बढ़ रहा था। सिपाही रौधाल बाजीराव धर्मा का अचानक ही मकान के समीप ही घने मक्के के खेत में छिपे एक उग्रवादी ने सामना हो गया। वह उग्रवादी फमल की झाड़ू लेते हुए मकान की ओर भागा। सिपाही रौधाल बाजीराव धर्मा ने उस उग्रवादी पर गोली चलाई। यद्यपि उस उग्रवादी की टांग में गोली लगी हुई थी, फिर भी वह मकान में रेंगकर घुसने और खिड़की पर पोजीशन लेने में कामयाब हो गया तथा सिपाही रौधाल बाजीराव धर्मा पर गोलियां चलाने लगा। उग्रवादी की ओर से की गई गोलियों की भारी बौछार के बावजूद वह वीर सिपाही तेजी से मकान की ओर बढ़ा और उसने अनुकरणीय साहस तथा पहलुशक्ति का परिचय देते हुए मकान पर धावा बोव दिया। इस युवा सैनिक के इस साहस के कारण उन्हें अपने सीने पर गोलियों की बौछार को सहन करना पड़ा। मराठा युद्ध का नारा लगाते हुए सिपाही बाजीराव धर्मा उग्रवादी पर बहादुरी से गोलियां चलाते रहे। उनके सीने पर गोलियों की दूसरी बार बौछार हुई और वे भूमि पर गिर पड़े। उस वीर सैनिक ने अन्य दलों के मकान के समीप आ जाने तक उग्रवादी को अपनी अंतिम सांस तक उलझाए रखा। अंततः सिपाही रौधाल बाजीराव धर्मा ने इस प्रकार अपने जीवन का बलिदान किया जिसके परिणामस्वरूप हिजबूल मुजाहिदीन का कंपनी कमांडर मारा गया और एक ए० के० 56 राइफल, 3 मैगजीन, 80 राउंड, 1 आर्जेम ग्रेनेड तथा 1 रूसी ग्रेनेड बरामद हुए।

इस प्रकार सिपाही रौधाल बाजीराव धर्मा ने उच्च वीरता और आत्म बलिदान की सर्वोच्च भावना का परिचय दिया।

16. जे० सी०-184295, सूबेदार,

शेख बशीर हुसन, (मरणोपरांत)
मराठा साइट इन्फैंट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 सितम्बर, 1993)

सूबेदार शेख बशीर हुसन 3 राष्ट्रीय राइफल्स की बी कम्पनी के प्लाटून कमांडर थे। 19 सितम्बर, 1993 को इस कम्पनी को अछवाल-दाकसुम सड़क (जम्मू और कश्मीर) पर रोड ओपनिंग ड्यूटी का कार्य सौंपा गया था। जलायम पहुंचने पर सड़क के उसर में धान के खेतों में संदेहपूर्ण हलचल महसूस की गई और अपने कंपनी कमांडर के आदेश पर सूबेदार शेख बशीर हुसन ने सड़क के साथ-साथ अपनी प्लाटून तैनात कर दी। उसी समय उनकी पार्टी पर राष्ट्र-विरोधी तत्वों की ओर से भारी गोलीबारी होने लगी। अपनी कमान का उत्साह बकाते हुए और अपनी सुरक्षा की विस्तृत परवाह न करते हुए जूनियर कमीशन प्राप्त अफसर बुशमनों की ओर से भारी गोलीबारी के बीच अपनी प्लाटून के साथ आगे बढ़ने लगे और वे उग्रवादियों से 50 मीटर की दूरी तक पहुंच गए। तब जूनियर कमीशन प्राप्त अफसर ने एक उग्रवादी को मात्र 20 गज की दूरी पर देखा जो उनके सैनिकों पर गोलियां चलाते ही वाला था। उस वीर ने तत्काल ही उस उग्रवादी पर हमला किया और उसे मार गिराया। परन्तु इस कार्यवाई में उन्हें भी घातक चोटें लगीं और उनकी मृत्यु हो गई। निरंतर आक्रमण की इस प्रक्रिया में तीन और राष्ट्रविरोधी तत्व मारे गये।

इस प्रकार सूबेदार शेख बशीर हुसन ने अदम्य साहस का परिचय दिया और सर्वोच्च बलिदान किया।

17. 4062068, नायक मदन लाल, गढ़वाल राइफल्स

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 सितम्बर, 1993)

नायक मदन लाल 03 राष्ट्रीय राइफल्स की "बी" कंपनी के सैक्शन कमांडर थे। 19 सितम्बर, 1993 को "बी" कंपनी को जम्मू तथा कश्मीर में अछवाल-दाकसुम सड़क को खोलने के काम पर लगाया गया था। उनका सैक्शन सूबेदार बशीर हुसन के अधीन अग्रणी प्लाटून के रूप में कार्यरत था।

अगुआ व्यक्तियों के जलायम पहुंचने के पश्चात् राष्ट्र-विरोधी तत्वों द्वारा घात लगाए जाने का पता चलने पर कम्पनी कमांडर ने अपनी कंपनी को तैनात होने का आदेश दिया। इतने में 150-200 मीटर की दूरी पर धान के खेत में छिपे राष्ट्रविरोधी तत्वों ने भारी गोलीबारी कर दी। यह अगुआ कंपनी घात स्थल पर अक्रमण करके उग्रवादियों से 50 मीटर की दूरी पर पहुंच गई। प्लाटून कमांडर द्वारा एक राष्ट्रविरोधी तत्व को काबू किए जाने पर नायक मदन लाल ने लांस हवलदार हरमिन्दर सिंह के साथ मिलकर अत्यंत साहसपूर्वक अपने सैक्शन का नेतृत्व किया

2-241 GI/94

और गोलियों की बौछार करके राष्ट्रविरोधी तत्वों के दल पर धावा बोल दिया। बंदूक की गोली से बुरी तरह से घायल होने के बावजूद वे बहादुरी से राष्ट्रविरोधी तत्वों पर हमला करते रहे और वीरगति प्राप्त करने से पहले एक और उग्रवादी को मार गिराने में कामयाब रहे।

इस प्रकार नायक मदन लाल ने उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस और आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया।

18. मेजर कोचू कोशे पानीकर एन० के०,

(आई० सी०-43962),

बिहार।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 सितम्बर, 1993)

10 बिहार की डी० कम्पनी मेजर कोचू कोशे पानीकर एन० के० के नेतृत्व में 26 सितम्बर, 1993 को जम्मू और कश्मीर के बारामूला जिला के अन्दरूनी में हिन्दुओं के उद्देश्य हुए घरों की तलाशी ले रहे थे। एक अग्रणी कंपनी ने इस क्षेत्र की घेराबंदी कर रखी थी और इस कमान की सैनिकों ने गांव के बाहर की धारा एक उग्रवादी को घरों की ओर भागते हुए देखा। मेजर कोचू कोशे पानीकर ने एक खोजी दल के साथ एक और अग्रणी प्लाटून और अति सावधानीपूर्वक खोज की। उद्देश्य हुए एक भिमांन विष्णु मठान को तलाशी लेते समय मठान में छिपे हुए उग्रवादी ने उन पर गोली चला दी जिसके कारण उनका बाई बांह में गंभीर चोट लगी। अकसर छत से खंभे में कूदा और गिर गया। उग्रवादी ने अकसर के पाम ही एक हथगोला फेंका। घायल मेजर कोचू कोशे पानीकर जोड़ के लिए रेंग रहे थे कि उनके पेट और छाती में हथगोले की चिरच से चौबीस घाव लगे। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद भी मेजर कोचू कोशे पानीकर ने वहां से हटने में इंकार किया और अपने सैनिकों को निरंतर निर्देश देते रहे। अंततः वह अतंकवादी मारा गया। इसके बाद मेजर कोचू कोशे पानीकर बेहोश हो गए और उन्हें वहां से निकाला गया।

इस प्रकार मेजर कोचू कोशे पानीकर एन० के० ने दृढ़ इच्छाशक्ति, समर्पण भावना और उच्चकोटि की साहसिक कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

19. 2585871, हवलदार,

सारथी रेड्डी बुडुप,

(मरणोपरांत)

मद्रास।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 4 अक्टूबर 1993)

4 अक्टूबर, 1993 को जम्मू तथा कश्मीर के बारामूला जिले में सोफोर तहसील के डबगाह गांव में घेराबंदी व खोज का कार्य किया गया। जब गांव की घेराबंदी की जा रही थी तो गांव की बाहरी सीमा पर स्थित कुछ भूतानों से सुबह साढ़े छह बजे राष्ट्रविरोधी तत्वों ने सेना की टुकड़ियों पर गोलियां चलाई। हवलदार सारथी रेड्डी बुडुप

ने आगे जाने की इच्छा व्यक्त की और जिन मकानों से गोलीयाँ आ रही थीं उनकी पहचान करने तथा उन्हें घेरने के लिए कुछ सैनिकों के साथ आगे बढ़े। सैनिकों की टुकड़ी जब मकान के सामने आ गई तो उग्रवादियों ने अचानक उन पर भारी गोलीबारी कर दी। हवलदार सारथी रेड्डी बुडुपु ने अनुकरणीय सूक्ष्म और अदम्य साहस का परिचय देते हुए तत्काल उग्रवादियों पर वापस हमला किया। तत्पश्चात् उन्होंने अपने साथी सैनिकों से तेज गोलीबारी करने को कहा ताकि वह आगे बढ़कर उग्रवादियों के नजदीक पहुँचकर उपयुक्त स्थान से प्रभावकारी ढंग से गोलीबारी कर सकें। इसी बीच ओ एक विरोधी छिपकर गोला चला रहा था और अन्य राष्ट्रविरोधी तत्वों को अपने स्थान से पीछे हटने के लिए फायरिंग कवर प्रदान कर रहा था उसने हवलदार सारथी रेड्डी बुडुपु पर गोलीयाँ चलाकर उन्हें घटनास्थल पर ही मार दिया।

इस प्रकार हवलदार सारथी रेड्डी बुडुपु ने उत्कृष्ट वीरता, आत्म बलिदान तथा अदम्य साहस का परिचय दिया।

20. सेकंड लेफ्टिनेंट शैलेन्द्र विक्रम कुमार (आई सी. 51879) गार्ड्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 अक्टूबर, 1993)

सेकंड लेफ्टिनेंट शैलेन्द्र विक्रम कुमार 5 गार्ड्स की ब्रेवो कंपनी के प्लाटून कमांडर थे। इस यूनिट ने जम्मू तथा कश्मीर के कुपवाड़ा जिले की हंदवाड़ा तहसील के पोरबुपेट गांव में 11 अक्टूबर, 1993 को एक कार्रवाई शुरू की थी।

इस कार्रवाई के दौरान कुछ विदेशी भाड़े के सैनिकों सहित राष्ट्रविरोधी तत्वों के एक दल की ओर से गोलीबारी होने लगी। सेकंड लेफ्टिनेंट शैलेन्द्र विक्रम कुमार इन उग्रवादियों को अततः लगभग पांच-छह घरों की ओर धकेल दिया और उन्हें वहाँ फंसा दिया। तत्पश्चात् उन्होंने अपनी सब यूनिट को पुनर्गठित किया और उन घरों पर कारगर रूप से हमला हो गए जिनमें राष्ट्रविरोधी तत्वों के छिपे होने की आशंका थी और एक सिरे से एक-एक घर की जाँच करने के उद्देश्य से एक दल का स्वयं नेतृत्व किया। तीन घरों की जाँच करने के बाद, शेष बचे घरों में से एक से कारगर गोलीबारी होने लगी। उनके दल के एक अग्रणी स्काउट पर गोली का घातक प्रहार हुआ। अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए, यह अफसर तेजी से आगे बढ़ा और उस स्काउट के शव को सुरक्षित घर पर पहुँचाया। फिर, उन्होंने जिस घर में राष्ट्रविरोधी तत्व छिपे हुए थे, उस घर पर 84 मि०मी० राकेट लांचर और अन्य सहायक गस्त्रों से प्रहार शुरू कर दिया। दो उग्रवादियों ने जोकि तब तक घायल हो चुके थे, अपने स्वचालित हथियार से प्रहार करके सेकंड लेफ्टिनेंट शैलेन्द्र विक्रम कुमार को घायल कर दिया। फिर भी, वे अपने हथियार से उग्रवादियों से

जुझते रहे और उनमें से एक उग्रवादी को मार गिराया। बाद में घावों के कारण वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार सेकंड लेफ्टिनेंट शैलेन्द्र विक्रम कुमार ने राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करने में अदम्य साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सर्वोच्च बलिदान किया।

21. कैप्टन आशीश,
(एस० एस०-34942),
मराठा लाइट इन्फैन्ट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अक्टूबर, 1993)

19 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री की "ए" कंपनी की 1 प्लाटून को 15 अक्टूबर, 1993 को 14.15 बजे कश्मीर घाटी में टोकिया लाश ग्राह जंगल में घान लगाने का कार्य सौंपा गया था। इस प्लाटून की कमान कैप्टन आशीश कर रहे थे। घात लगाने वाला दल जब नहामा गांव में पहुँचा तो सबसे पहला वाहन जिसमें कैप्टन आशीश सवार थे, एक मकान से की जा रही गोलीबारी के प्रभाव क्षेत्र में आ गए निकट से की जा रही गोलीबारी के बावजूद कैप्टन आशीश ने अपनी प्लाटून को उस क्षेत्र की घेराबंदी करने का आदेश दिया। सैनिकों के प्रभावी कार्रवाई करने से, राष्ट्रविरोधी तत्व छिपने के लिए भागने लगे। कैप्टन आशीश ने जिनके दल में केवल तीन अन्य व्यक्ति थे तीन राष्ट्रविरोधी तत्वों को गोलीबारी करते हुए भागते देखा। मामले की गंभीरता को भाँपते हुए कैप्टन आशीश ने हथि पोजीशन से गोलीबारी करके उग्रवादियों को सब्जी के खेत में घुसने पर मजबूर कर दिया लगभग 15.20 बजे कैप्टन आशीश और एक आतंकवादी ने एक दूसरे को देखा। इसके परिणामस्वरूप हुई गोलीबारी में कैप्टन आशीश के दाहिनी जाँघ के सिरे पर गोली लगने से घाव हो गया परन्तु वह आतंकवादी वही ढेर हो गया। बाद में उसकी पहचान अब्दुल मजीद मीर उर्फ "अल बर्ग" के कमांडर इन चीफ के रूप में की गई। कुछ ही क्षणों में पहले उग्रवादी की सहायता में गोलीबारी कर रहे एक-दूसरे उग्रवादी ने कैप्टन आशीश पर नजदीक से गोली चला दी। कैप्टन आशीश नीचे झुक गए और उन्होंने गिरते समय भी फुर्ती से गोली चलाकर उस राष्ट्रविरोधी तत्व को तत्काल मार गिराया। बाद में उसकी पहचान अब्दुल मजीद मीर के अंगरक्षक के रूप में की गई।

इस प्रकार कैप्टन आशीश ने राष्ट्रविरोधी तत्वों का सामना करने में उत्कृष्ट वीरता अदम्य साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

22. सेकंड लेफ्टिनेंट भुक्केश आनन्द (मरणोपरांत)
(आई सी-52193)
सेना सेवा कोर।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 अक्टूबर 1993)

12 महार के सेकंड लेफ्टिनेंट मुकेश आनन्द (आई० सी०-52193) कश्मीर में नियंत्रण रेखा के निकट स्थित सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण और कठिन चौकी के प्रभारी अधिकारी थे।

27 अक्टूबर, 1993 को इस चौकी पर स्थाई सुरक्षा बाड़ का निर्माण करने के लिए सामग्री लेकर सिविल कुलियों को यूनिट बेस से वहां भेजा जाना था। जब कुली अपराह्न साढ़े चार बजे तक नहीं पहुंचे तो सेकंड लेफ्टिनेंट मुकेश आनन्द ने पहले कुलियों के बारे में यूनिट से जांच की और अनिष्ट की आशंका से ग्रस्त होकर फिर कुलियों को खोजने के उद्देश्य से एक गश्ती दल का नेतृत्व करने का निर्णय किया। दिन के कम होते हुए प्रकाश पहाड़ी क्षेत्र गहन जंगल और नियंत्रण रेखा के अति निकट मार्ग पर भारी झाड़-संखाड़ होने के बावजूद अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए उन्होंने गश्ती दल का नेतृत्व किया। गश्ती दल के लगभग 900 मीटर चलने पर नियंत्रण रेखा के समीप उगे झाड़-संखाड़ में छिपे हुए कुछ राष्ट्रविरोधी तत्वों/दुश्मन के सैनिकों ने गश्ती दल पर घात लगाकर अचानक हमला कर दिया जिससे दोनों ओर से गोलीबारी शुरू हो गई। इस गोलीबारी में सेकंड लेफ्टिनेंट मुकेश आनन्द को यू० एम० जी० और ए० के०-47 राइफल की कुछ गोलियां आ लगीं। छाती में गंभीर चोटों के बावजूद वे दुश्मन से झुझते रहे और लाइट मशीन गन से प्रहार कर रहे गैर-कमीशन प्राप्त अफसर को दुश्मन से झुझते रहने का निर्देश दिया। वे स्वयं कूटने की सहायता से गोलीबारी करते हुए तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि उनके सिर पर गोली नहीं आ लगी। इस युवा अफसर का यह सर्वोच्च बलिदान भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप था।

इस प्रकार सेकंड लेफ्टिनेंट मुकेश आनन्द ने बहादुरी, साहस और आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया।

23. 4559906 सिपाही मोजिद्रा विजय शान्तिलाल महार। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 अक्टूबर, 1993)

12 महार रेजिमेंट के सिपाही मोजिद्रा विजय शान्तिलाल को जम्मू और कश्मीर के तंगधार क्षेत्र में सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण तथा कठिन चौकी हम्प पर तैनात किया गया था।

27 अक्टूबर, 1993 को चौकी के कमांडर सेकंड लेफ्टिनेंट मुकेश आनन्द ने चौकी के जूनियर कमीशन अफसर को आदेश दिया कि वे कुछ अन्य रैंकों को लेकर तत्काल आए क्योंकि वे उन सिविल कुलियों को ढूँढने जा रहे थे जो सुबह बेस से रक्षा निर्माण सामग्री लेकर चले थे तथा 16.30 बजे तक चौकी नहीं पहुंचे थे। सिपाही मोजिद्रा विजय शान्तिलाल ने यह अच्छी तरह जानते हुए कि नियंत्रण रेखा के नजदीक का यह रास्ता अत्यंत कठिन है स्वेच्छा से इस दल के साथ जाने के लिए कहा। जब खोजी बल

मुश्किल से 900 मीटर ही चला था तब रास्ते के नजदीक की झाड़ियों में छुपे कुछ राष्ट्रविरोधी तत्वों/शत्रु सैन्य दल ने इस दल पर घात लगाई जिससे भारी गोलाबारी हुई और इसमें सेकंड लेफ्टिनेंट मुकेश आनन्द को गोली लगी और उनकी उसी समय मृत्यु हो गई जबकि सिपाही मोजिद्रा विजय शान्तिलाल की छाती में एक गोली लगी। अपनी गंभीर चोट के बावजूद उन्होंने इन व्यक्तियों को व्यस्त रखा तथा अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए वे आगे बढ़े और राष्ट्रविरोधी तत्वों/शत्रुओं पर एक हथगोला फेंका। इसी समय इनके हाथ तथा सिर में यूनिवर्सल मशीनगन की गोली लगी और उन्होंने अपनी अंतिम सांस ली।

इस प्रकार सिपाही मोजिद्रा विजय शान्तिलाल ने बहादुरी साहस तथा आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया।

24. 2776573 लांस हवलदार

लक्ष्मण भवाकू ओलकर,

(मरणोपरान्त)

मराठा लाइट इन्फैन्ट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 नवम्बर, 1993)

12 नवम्बर, 1993 को विशेष सूचना मिलने पर 19 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री कश्मीर घाटी में स्थित रोछा गांव में घेराबंदी और खोज कार्य में लग गई। दोपहर बाद तीन बजे एक खोजी दल, जिसकी कमान नायब सूबेदार कलबर्ग लक्ष्मण लिम्बाजी कर रहे थे जिसमें पंद्रह अन्य रैंक और पांच सिविलियन थे, बनपुरा मोहल्ला में खोज-कार्य में लगा हुआ था। इस दौरान एक राष्ट्रविरोधी तत्व ने अशरफ मल्ला के मकान से इस दल पर हथगोला फेंका। लांस हवलदार लक्ष्मण भवाकू ओलकर जो इस दल के एक सदस्य थे, हथगोले के टुकड़ों से घायल हो गए। इस दल द्वारा मकान को घेर लिए जाने के बावजूद राष्ट्रविरोधी तत्वों ने मकान से गोलीबारी शुरू कर दी। बुरी तरह से घायल होने के बावजूद लांस हवलदार लक्ष्मण भवाकू ओलकर रेंगकर मकान के बाहरी द्वार तक पहुंचे और मकान के अंदर दो हथगोले फेंककर अपनी राइफल से गोलियां दाग दीं। परिणामतः दो राष्ट्रविरोधी तत्व मारे गए और एक बुरी तरह से घायल हो गया। घायल राष्ट्रविरोधी तत्व गोलीबारी करता रहा। हथगोलों के फटने से वहां पड़ी हुई सूखी घास में आग लग गई। मकान के भीतर छिपे राष्ट्रविरोधी तत्व से आत्मसमर्पण के लिए कहा गया परंतु उसने ऐसा नहीं किया। उसे बाहर निकालने के लिए लांस नायक ओलकर ने 84 मि० मी० का उच्चविस्फोटक राकेट लांचर दागा। जिस पर वह राष्ट्रविरोधी तत्व अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए बाहर आया। बुरी तरह से घायल हुए लांस हवलदार लक्ष्मण भवाकू ओलकर ने उसे मकान की देहली पर गोली से मार कर ढेर कर दिया। पर लांस हवलदार ओलकर उसी शाम चार बजकर तीस मिनट पर वीरगति को प्राप्त हो गए। इस मुठभेड़ में मारे गए

राष्ट्रविरोधी तत्वों की बटालियन कमांडर्य मुश्ताक सेकशन कमांडर फयाज तथा रियाज अहमद के रूप में पहचान की गई जो सभी "हिजबुल मुजाहीदीन" से सम्बन्धित थे।

इस प्रकार हवलदार लक्ष्मण भवाक् ओलकर ने बीरता, साहस तथा आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया।

25. 3179896 सिपाही देवेन्द्र कुमार (मरणोपरान्त) जाट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 नवम्बर, 1993)

16 नवम्बर, 1993 को सिपाही देवेन्द्र कुमार नेभी क्षेत्र गश्त के लिए कमांडिंग अफसर के जोंगा में यात्रा कर रहे थे। उनके पीछे दो अन्य वाहन भी चल रहे थे। उनके घाटी में पाजलपुर गांव (गुंड नसीर) के बाहर पहुंचने पर तीन सशस्त्र उग्रवादियों ने गोलियां चलाई और गांव में भाग गए। जोंगा के रुकते ही सिपाही देवेन्द्र कुमार बाहर खूद पड़े और उनके पीछे दौड़े। वे पीछा करते हुए उन्हें एक ऐसे स्थान पर ले गए जहां उनके आगे एक दीवार आ गई जिसे वे नहीं फांद सकते थे। हताश होकर उग्रवादियों ने मात्र 10 गज की दूरी से उनके ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। गोलियों से सिपाही देवेन्द्र कुमार का सीना और पेट जखमी हो गया। उस निर्भीक जवान ने घातक घावों के बावजूद उन उग्रवादियों पर अपनी मैगजीन की सारी गोलियां बाग दीं जिससे उनमें से एक उग्रवादी मारा गया। सिपाही देवेन्द्र कुमार को बेस अस्पताल पहुंचाया गया जहां आपरेशन टेबल पर उनकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार सिपाही देवेन्द्र कुमार ने तीव्रतापूर्वक जवाबी कार्रवाई करने की क्षमता अदम्य साहस अद्वितीय निष्ठा और आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया।

26. सेकंड लेफ्टिनेंट पंकज बरीकू
(आई० सी०-51782)
सिख।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 नवम्बर, 1993)

जम्मू तथा कश्मीर के गदगाम जिले के गांव जुगू खोरयान में विदेशी भाड़े के सैनिकों सहित सशस्त्र उग्रवादियों के उस इलाके में सक्रिय होने की पक्की सूचना मिलने पर सिख रेजिमेंट की दूसरी बटालियन द्वारा 20, नवम्बर 1993 को संक्रिया "कोल्ड फ्यूरा" शुरू की गई थी।

सुबह लगभग 07.30 बजे सेकंड लेफ्टिनेंट पंकज बरीकू ने देखा कि युद्धक यूनिफार्म में भाड़े के दो विदेशी सैनिक घेराबंदी से बाहर भाग निकलने का प्रयास कर रहे हैं। वे साहसपूर्ण पहल करते हुए उनके निकट पहुंच गए और भाड़े के सुप्रशिक्षित अफगान सैनिकों के पीछे जाकर उनपर भीषण हमला कर दिया। निर्भीकतापूर्वक ये उग्रवादियों से जूझते रहे और साथ ही अपने साथी सैनिकों को बेहतर मोर्चा लेने का निर्देश दिया। एक उग्रवादी को अपने से मात्र 20 गज की दूरी पर पाकर उन्होंने भारी सूक्ष्म-बूस का

परिचय देते हुए दो हथगोले फेंके और उग्रवादी को मार गिराया। तभी भाड़े के दूसरे अफगान सैनिक ने बाणू से गोली चलाकर उनके दाहिने सीने के निचले भाग में धाव कर दिया। घायल होने और भारी रक्तस्राव के बावजूद वे निर्भीक बने रहे और अनुकरणीय साहस एवं दृढ़संकल्प का परिचय देते हुए दोनों उग्रवादियों से जूझते रहे और अंततः एक उग्रवादी को मार गिराया। घायल अवस्था में ही वे दूसरे भाड़े के सैनिक पर गोलीबारी का निदेश देते रहे जिसे बाद में सिपाही इकबाल सिंह ने पीछा करके मार गिराया। तब तक बहुत अधिक खून बह जाने के कारण सेकंड लेफ्टिनेंट पंकज बरीकू बेहोश हो गए और 09.00 बजे उन्हें निकटवर्ती हेलीपैड से हेलिकाप्टर की सहायता से 92 बेस अस्पताल में पहुंचाया गया जहां इनका तत्काल आपरेशन किया गया और इन्हें चमत्कारपूर्वक बचा लिया गया।

इस प्रकार सेकंड लेफ्टिनेंट पंकज बरीकू ने असाधारण कोटि के साहस दृढ़ संकल्प पहलशक्ति और नेतृत्व का परिचय दिया।

27. 3388598 सिपाही इकबाल सिंह, सिख (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 नवम्बर, 1993)

सिपाही इकबाल सिंह जम्मू तथा कश्मीर के बडगांव जिले के जुगू खोरयान गांव में सशस्त्र उग्रवादियों के विरुद्ध की जा रही संक्रिया के दौरान सामरिक रोधी बल के सदस्य थे। सुबह लगभग 6 बजकर 40 मिनट पर इस दल ने छिपकर भागने का प्रयास कर रहे युद्धक ड्रेस पहने दो उग्रवादियों को देखा। इसके बाद हुई मुठभेड़ में एक उग्रवादी सेकंड लेफ्टिनेंट पंकज बरीकू के हाथों मारा गया और दूसरा उग्रवादी इस अफसर को गोली से घायल करके घने जंगल में सुरक्षित स्थान की ओर भाग गया। सिपाही इकबाल सिंह ने जब अपने अफसर को गंभीर रूप से जखमी देखा तो वे उस भागते हुए उग्रवादी के पीछे दौड़ पड़े जिसमें अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी थी। सिपाही इकबाल सिंह और भागते हुए उस उग्रवादी के बीच जब दूरी कम रह गई तो भाड़े के उस उग्रवादी द्वारा चलाई गई गोलियां खतरनाक रूप से उनके निकट से सनसनाते हुए निकलने लगी और एक गोली सिपाही इकबाल सिंह की छाती पर आ लगी। गंभीर घावों की परवाह न करते हुए उस बहादुर जवान ने साहसिक पहल करते हुए उस भाड़े के उग्रवादी को मार गिराने का प्रयास जारी रखा। भाड़े का वह अफगान उग्रवादी घनी बेलों से ढकी चटानों के पीछे छिप गया। तथापि सिपाही इकबाल सिंह ने उसे ऐसा करते देख लिया और वे उस भाड़े के उग्रवादी के निकट पहुंच गए। अनुकरणीय साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए उस उग्रवादी पर हमला कर दिया जिसको अपने विरोधी से इतनी तेज कार्रवाई की बिल्कुल अपेक्षा नहीं थी। इस मुठभेड़ में वह भाड़े का उग्रवादी मारा गया। अपना अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त करने के पश्चात् सिपाही इकबाल सिंह अपने घावों के कारण बीरगति को प्राप्त हो

गए। बाद में उस उग्रवादी के शव के पास से एक एक के—
58 माइफल पोंच मैगजीन और 119 कारतूस बरामद हुए।

इस प्रकार सिपाही इकबाल सिंह ने अदम्य साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए सर्वोच्च बलिदान किया।

28. 4177217 लांस नायक राय सिंह, कुमाऊं (मरणो परांत)।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 दिसम्बर, 1993)

एक पकड़े गए राष्ट्रविरोधी तत्व द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर 13 कुमाऊं रेजिमेंट ने 10 दिसम्बर, 1993 को जम्मू तथा कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के एक गांव की घेराबंदी और खोजी संक्रिया आरम्भ की।

सुबह लगभग सात बजे विभिन्न खोजी दल घेराबंदी करके इस गांव की ओर बढ़ने लगे। लगभग साढ़े सात बजे लांस नायक राय सिंह ने एक वृक्ष के गिरे हुए तने, जिसकी दूरी मुश्किल से 30 मीटर रही होगी, के ऊपर से होकर बाहर निकली हुई यूनिवर्सल मशीनगन की नाल देखी। लांस नायक राय सिंह ने उस समय यह महसूस करते हुए कि संयोग से उसे उग्रवादियों के छिपने के एक स्थान का पता चल गया है और यदि यूनिवर्सल मशीनगन से गोलीबारी हुई तो उससे उनके साथी गंभीर रूप से हताहत होंगे, उन्होंने अपनी सुरक्षा की कतई परवाह न करते हुए राष्ट्रविरोधी तत्वों के छिपने के उस स्थान पर धावा बोल दिया और एक उग्रवादी को मार गिराया जो उस स्थान पर यूनिवर्सल मशीनगन संभाले हुए था। तत्पश्चात् उन्होंने एक पेड़ के पीछे छिपे एक अन्य राष्ट्रविरोधी तत्व को देखा और पुनः लांस नायक राय सिंह ने दोबारा गोली चलाई और उसे वहीं मार गिराया। बाद में पता चला कि वह हिजबुल मुजाहिदीन का बटालियन कमांडर गुलाम हुसैन उर्फ गौहर अयूब था। तथापि, दो अन्य राष्ट्रविरोधी तत्वों ने लांस नायक राय सिंह पर गोली चलाई और उन्हें घायल कर दिया। वे बेहोश होकर गिर पड़े लेकिन इससे पहले उन्होंने एक अन्य उग्रवादी को मार गिराया। जब लांस नायक सतवीर सिंह ने देखा कि राष्ट्रविरोधी तत्व लांस नायक राय सिंह पर गोलियां बरसा रहे हैं तो वे वहां पहुंच गए और उन्होंने बचे हुए उग्रवादी को मार गिराया, जिसके बारे में बाद में पता चला कि वह एक गैर-कश्मीरी था। लांस नायक राय सिंह को 10 दिसम्बर, 1993 को एक हेली-काप्टर से 92 बेस अस्पताल ले जाया गया। परन्तु उनके शरीर पर भारी घाव होने के कारण वे 15 दिसम्बर, 1993 को वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार, लांस नायक राय सिंह ने राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करते हुए वीरता तथा साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

29. मेड मोहिन्दर लाल, सीमा सड़क विकास बोर्ड

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 दिसम्बर, 1993)

मेड मोहिन्दर लाल (ब्रिगेड आफ गार्ड्स के सेवानिवृत्त हवलदार) को जम्मू तथा कश्मीर के नौशेरा सेक्टर में कलाल-अंगेर सड़क पर तह बिछाने के कार्य के लिए 58 रोड कन्स्ट्रक्शन कंपनी द्वारा नियुक्त किया गया था।

19 दिसम्बर, 1993 को लगभग 0930 बजे जब वे अदायगी प्राप्त करके वापस घर लौट रहे थे तो उन्होंने एक भारी विस्फोट की आवाज सुनी और उसके प्रभाव को महसूस किया। जब उन्होंने ऊपर की ओर देखा तो उन्हें सड़क के किनारे से 10 मीटर दूर रोना के एक प्रवाण को (जिसकी बाद में 890 ए० टी० कंपनी के सिपाही सुरेन्द्र सिंह के रूप में पहचान की गई) जिसकी एक टांग उड़ गई थी खून में लथपथ पूर्णतया स्तब्ध मुद्रा में पड़े हुए सहायता के लिए पुकारते हुए देखा। मेड मोहिन्दर लाल तत्काल समझ गए कि यह दुर्घटना राष्ट्रविरोधी तत्वों द्वारा लगाई गई सेना कार्मिक रोधी बारूदी सुरंग का परिणाम है। सैन्य पृष्ठभूमि होने के कारण उन्होंने महसूस किया कि इस क्षेत्र में इस प्रकार की और भी बारूदी सुरंगें हो सकती हैं। इसके बावजूद इन्होंने घायल सिपाही की सहायता करने का निर्णय लिया।

अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता न करते हुए मेड मोहिन्दर लाल तीव्र वेदना से कराहते हुए घायल सिपाही सुरेन्द्र यादव की सहायता के लिए तुरन्त पहुंच गए। उन्हें वहां से उठाकर ले जाते समय मेड मोहिन्दर लाल का पांव एक सेना कार्मिक रोधी बारूदी सुरंग पर पड़ गया और वे गंभीर रूप से घायल हो गए। इससे उनके बाएं पैर का पंजा उड़ गया जिसकी वजह से बाद में उनका बायां पैर काटना पड़ा।

इस प्रकार मेड मोहिन्दर लाल ने अन्य व्यक्ति के लिए अदम्य साहस, वीरता और करुणा का प्रदर्शन किया।

30. मेजर हरिन्द्रपाल सिंह सन्धु (आई० सी०-43475) गार्ड्स (मरणोपरांत)।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 दिसम्बर, 1993)

मेजर हरिन्द्रपाल सिंह सन्धु राष्ट्रीय राइफल बटालियन की डेल्टा कंपनी न० 1 के कमांडिंग अफसर थे। इस कंपनी को 23 दिसम्बर, 1993 को विश्राम दिया गया था। तथापि, मेजर सन्धु ने एक तेज प्रत्याक्रमण दल तैयार किया और कमांडिंग अफसर की पार्टी पर लगभग 1100 बजे सुबह गोलीबारी की आवाज सुनने पर वह पश्चिम दिशा की ओर से कश्मीर घाटी के बिजबियारा शहर की ओर चल पड़े। जैसे ही वे बस्ती में पहुंचे उन पर गोलियों की बौछार होने लगी परन्तु वे राष्ट्रविरोधी तत्वों का पीछा करने में सफल हुए और कमांडिंग अफसर की पार्टी को बिपत्ति से मुक्त कराया। उग्रवादियों का पीछा करते हुए मेजर हरिन्द्रपाल सिंह सन्धु पर यूनिवर्सल मशीनगन की गोलियां लगीं और चिकित्सा जांच केन्द्र पहुंचने पर वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस प्रकार, मेजर हरिन्द्रपाल सिंह सन्धु ने अनुकरणीय साहस तथा आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया।

31. 14344443 नामक ललन प्रसाद कुमार, आर्टिलरी (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 25 दिसम्बर, 1993)

25 दिसम्बर, 1993 को 8 माउंटेन आर्टिलरी 'ब्रिगेड' द्वारा किए गए घेराबन्दी एवं खोजी कार्य में नायक ललन प्रसाद कुमार को प्लाटून की लाइट मशीनगन के गनर नं० 1 के रूप में तैनात किया गया था। इस प्लाटून को कश्मीर घाटी के गांव कोनाबल में उग्रवादियों को खोजने के लिए तैनात किया गया था। इस खोज के दौरान, कुछ छुपे हुए उग्रवादियों ने अचानक खोजी दल पर गोली-बारी शुरू कर दी। खोजी दल ने तत्काल उस मकान को घेर लिया जहां से गोली-बारी हो रही थी। जब उग्रवादी उस मकान के भीतर घिर गए तो उनमें से एक ने सैन्य दल पर एक हथगोला फेंका और उसने भागकर घेरा तोड़ने का प्रयास किया। उस उग्रवादी द्वारा फेंका गया हथगोला नायक ललन प्रसाद कुमार के बिल्कुल पास गिरा, उन्होंने झुकने का प्रयास किया परन्तु ऐसा करने के लिए वहां जगह नहीं थी और न ही इतने कम समय में वहां से सुरक्षित हटा जा सकता था। वे हथगोले के टुकड़ों से गंभीर रूप से घायल हो गए तथा उनका खून बहने लगा। अपने घावों की परवाह न करते हुए उन्होंने तुरन्त अपना स्थान लिया और अपनी मशीनगन से उग्रवादी पर गोली चलाई। इस पर उग्रवादी ने अपनी दिशा बदली और वह गांव से बाहर की ओर भागा। नायक ललन प्रसाद कुमार ने घायल अवस्था में ही अपनी लाइट मशीनगन उठाई और लगभग 20 मीटर तक उस उग्रवादी का पीछा कर उसे मार गिराया। उस भागते हुए उग्रवादी को मौत के घाट उतारने के बाद वे अपनी मशीनगन को वापस मूल स्थान पर ले आए और फिर उसे वहां रख दिया। उनका अत्यधिक खून बह रहा था इसलिए उन्हें प्राथमिक सहायता दी गई परन्तु अस्पताल ले जाने से पहले ही घावों के कारण जल्दी ही उन्होंने प्राण त्याग दिए। इस प्रकार, नायक ललन प्रसाद कुमार ने वीरता, साहस तथा आत्मबलिदान की भावना का प्रदर्शन किया।

32. 2678080 नायक तेज सिंह, ग्रेनेडियर (मरणोपरांत)।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 जनवरी, 1994)

14 जनवरी, 1994 को प्राप्त सूचना के आधार पर 22 ग्रेनेडियर की "क" कंपनी ने जम्मू-कश्मीर में पुलवामा जिले में छिन्तरगाम गांव के उन पांच घरों में छापा मारने के लिए प्रातः साढ़े छह बजे गांव की बाहरी और भीतरी सीमा की घेराबन्दी की जिसमें उग्रवादियों ने आश्रय लिया था। नायक तेज सिंह, उन्होंने एक घर के चारों तरफ भीतरी सीमा की घेराबन्दी की थी, ने छिपे हुए उग्रवादियों से बाहर निकलने

के लिए कहा परन्तु बाहर निकलने के बजाए उग्रवादियों ने अक्रमात् ही मकान के बिल्कुल पीछे स्थित कोठारघर से उनकी पार्टी पर भारी गोलीबारी कर दी। नायक तेज सिंह और उनकी पार्टी तुरन्त ही ओट में छिप गई। उग्रवादियों ने जब यह देखा कि वे चारों ओर से घिर गए हैं तब उन्होंने जनरल परपज मशीनगन और ए के-56 राइफलों से कोठारघर के निचले हिस्से से की जा रही गोलीबारी की आड़ में घेराबन्दी को तोड़ने का प्रयास किया। पहले जिन दो उग्रवादियों ने गोलीबारी की शुरुआत की उन्हें नायक तेज सिंह ने मार गिराया। तीसरे उग्रवादी ने जब देखा कि उसके दोनों साथी पहले ही मारे जा चुके हैं तब उसने ग्रेनेडियर अजित कुमार की ओर भोवण गोलीबारी कर दी। अपने साथी का जीवन खतरे में देखकर, नायक तेज सिंह अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता किए बगैर ओट में से बाहर निकले और इस प्रकार उन्होंने उग्रवादी के सवक्ष उपस्थित होकर उसका ध्यान दूसरी ओर केन्द्रित करने का प्रयास किया। उग्रवादी ने तुरन्त ही आक्रमण की दिशा मोड़ दी और नायक तेज सिंह पर भी गोलीबारी की। नायक तेज सिंह ने भी अपनी ए० के०-47 राइफल से गोलियां दागी जिसके कारण एक उग्रवादी मारा गया। इन मुकाबले में नायक तेज सिंह को लगी गोलियों से उनकी दाहिनी टांग और पेट के ऊपरी हिस्से में चोटें लगीं। चोटों की वजह से वे नीचे गिर पड़े परन्तु इतने पर भी कोठारघर की ओर निरंतर गोलीबारी करते रहे और उन्होंने जनरल परपज मशीनगन को सफलतापूर्वक शांत कर दिया। यद्यपि उनका अत्यधिक रक्त-स्राव हो रहा था तथापि उन्होंने उस स्थान से हटाए जाने से इंकार कर दिया, किंतु नायक शिव राज और ग्रेनेडियर अजित कुमार ने उठाकर उन्हें वहां से हटाया। नायक तेज सिंह ने अकेले ही न केवल तीन दुर्दान्त उग्रवादियों को मार गिराया बरन अपने एक साथी की जान बचाने के लिए अपने जीवन को खतरे में डाल दिया। इस कार्रवाई में हिजबुल मुजाहिदीन दिल के कुल पांच उग्रवादी मारे गए और एक उग्रवादी को पकड़ लिया गया। अस्पताल में भर्ती करवाए गए नायक तेज सिंह ने उसी दिन सायं सवा तीन बजे अपनी चोटों की वजह से दम तोड़ दिया।

इस प्रकार नायक तेज सिंह ने इस कार्रवाई के दौरान उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता, साहस एवं वीरता का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

33. जे सी०-478098 नायक सूबेदार ओम प्रकाश, राजपूत (मरणोपरांत)।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 जनवरी, 1994)

31 जनवरी, 1994 को 27 राजपूत रेजिमेंट ने जम्मू तथा कश्मीर में बारामूला जिले के गुह्या रूसरीपुरा और दारागाम गांवों में उग्रवादियों को पकड़ने तथा उनसे हथियार बरामद करने का कार्य किया। इस दल ने तीन उग्रवादियों को भागकर दारागाम गांव में घुसते हुए देखा। गांव की

तुरन्त धेराबन्दी की गई और उग्रवादियों को पकड़ने के लिए योजनाबद्ध तरीके से खोज शुरू कर दी गई।

लगभग दोपहर को अब एक खोजी दल उग्रवादियों की तलाश में एक घर में घुसा तो उस पर वहां छिपे एक उग्रवादी ने गोली चला दी। इसके पश्चात् एक उग्रवादी ने बाहर आकर आत्मसमर्पण कर दिया। उसने सैन्य दल को बताया कि दूसरे उग्रवादी ने बाहर आने से भना कर दिशा जोकि खतरनाक हिजबुल मुजाहिदीन गुप्त का डिप्टी बटालियन कमांडर था। छिपे हुए उग्रवादी ने खोजी दल के सामने आत्मसमर्पण करने के अलावा उस पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं। मकान कंसीट का बना होने के कारण खोजी दल की गोलीबारी का अधिक असर नहीं हो रहा था इसलिए मकान की खिड़कियों के जरिये हथगोले फेंके जाने का निर्णय लिया गया। नायब सूबेदार श्रीम प्रकाश स्वच्छा से इस खतरनाक कार्य को करने के लिए तैयार हो गए क्योंकि इस दल की स्थिति के बारे में तनिक भी पता चलने पर उन उग्रवादियों की ओर से भारी गोलीबारी हो सकती थी जो कपरे के भीतर सुरक्षित छुपे हुए थे तथा खिड़कियों से गोलीबारी कर रहे थे। अपनी सुरक्षा की परवाह न करके नायब सूबेदार श्रीम प्रकाश पीछे की ओर से तेज गति से दौड़कर खिड़की तक पहुंच गए और उन्होंने एक हथगोला अंदर फेंक दिया। इसके बाद जैसे ही नायब सूबेदार श्रीम प्रकाश आड़ लेने के लिए वापस धौड़ रहे थे कि उग्रवादी ने उन पर गोलियां चला दीं परन्तु वे बिना किसी क्षति के आड़ लेने में कामयाब हो गए। इसके कुछ ही मिनट पश्चात् वे फिर मकान के नजदीक पहुंचे और खिड़की के जरिये दूसरा हथगोला अंदर फेंक दिया। उग्रवादी ने उन पर फिर गोली चलायी परन्तु उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा।

मकान के भीतर छिपे उग्रवादी की वास्तविक स्थिति का सावधानीपूर्वक पता लगाने के पश्चात् नायब सूबेदार श्रीम प्रकाश मकान की खिड़की की ओर बढ़े तथा एक बार फिर एक हथगोला भीतर फेंका। गोला फेंकने के बाद जैसे ही वे वापस लौट रहे थे, उग्रवादी ने उसी खिड़की से उन पर गोलियां चला दीं। इस बार नायब सूबेदार श्रीम प्रकाश की छाती के बायीं ओर ऊपरी हिस्से में गोली लगने से घाव हो गया। इसी दौरान कमरे में बल फट गया और उग्रवादी घायल हो गया जिससे उसे मारना तथा उससे ए० के०-56 राइफल बरामद करना आसान हो गया। नायब सूबेदार श्रीम प्रकाश को तुरन्त 92 बेस अस्पताल ले जाया गया और वहां उन्होंने सायं साढ़े आठ बजे अंतिम सांस ली।

इस प्रकार नायब सूबेदार श्रीम प्रकाश ने अव्यय साहस, कर्तव्यपरायणता तथा आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

सं० 144 प्रेज/94—राष्ट्रपति निम्नलिखित अफसरों/कर्मियों को उनकी असाधारण कर्तव्यनिष्ठा एवं साहसिक कार्यों के लिए “मिना मेडल/आर्मी मेडल” प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

कर्नल गोविन्द मोहन नायर, (आई० सी०-25833), गोरखा राइफल्स।

कर्नल घोषा भूपिन्द्र सिंह (आई० सी०-25647), गोरखा राइफल्स (फंट्रियर फोर्स)।

कर्नल श्रीधरन श्याम कुमार (आई० सी०-25064), गाईस।

लेफ्टिनेंट कर्नल जयचन्द्र मिश्र (आई० सी०-27638), आर्मी एविएशन।

मेजर लैमरी हारिस जार्ज (आई० सी०-30002), आर्मी एविएशन।

मेजर अनिल कुमार सामन्ता (आई० सी०-43682) मद्रास।

मेजर मान राज सिंह (आई० सी०-38386), महार।

मेजर राजेन्द्र सिंह शेखावत (आई० सी०-45191), राजपूत राइफल्स।

मेजर हितेन साहनी (आई० सी०-48659), ग्रेनेडियर्स।

मेजर भोजे राजीव रेड्डी (आई० सी०-47729), जाट।

मेजर उपिन्द्र सिंह गिल (आई० सी०-37486), कवचित।

मेजर क्रिस्टोफर प्रिगोरी मार्लेस (आई० सी०-34481), मद्रास।

मेजर बीरेन्द्र नांगिया (आई० सी०-40240), कुमाऊं।

मेजर लख सिंह (आई० सी०-42473), 7 असम रेजिमेंट।

मेजर राजबीर सिंह खंगरोट (आई० सी०-45720), डोगरा।

कैप्टन राजीव कुमार श्रीवास्तव (आई० सी०-43001), नागा।

कैप्टन सुधीर कुमार (आई० सी०-47623), पैरा।

कैप्टन अमिताभ राय (आई० सी०-49511), गढ़वाल राइफल्स।

कैप्टन आशुतोष शुक्ल (आई० सी०-48563), आटिलरी।

कैप्टन अनित कौरा (आई० सी०-428 25),
जाट ।

सेकंड लेफ्टिनेंट नीरज गुक्ला (आई० सी०-50836)
जम्मू और कश्मीर राइफल ।

सेकंड लेफ्टिनेंट रूपम वसु चौधरी, (एस० एस०-
35105), सिख लाइट इंफैंट्री ।

सेकंड लेफ्टिनेंट वामुदेवन नारायण, (आई० सी०-
51848), मिश्र ।

सेकंड लेफ्टिनेंट पुनीत आहुजा (आई० सी०-
50702), गार्ड्स ।

सेकंड लेफ्टिनेंट हरदीप सिंह (आई० सी०-50927),
जम्मू और कश्मीर राइफल ।

सेकंड लेफ्टिनेंट प्रनव कान्ती चौधरी (आई० सी०-
52274), सेना सेवा कोर ।

जे० सी०-155724, सूबेदार जगदीश राम, डोगरा ।

जे० सी०-117177, सूबेदार एम० टी० अब्दुल
सामद कुंज, मद्रास ।

जे० सी०-153537, सूबेदार शमशेर सिंह, इंजी-
नियर्स (मरणोपरांत) ।

जे० सी०-122310, सूबेदार बेल बहादुर गुरूंग,
असम राइफल ।

जे० सी०-183515, सूबेदार अवतार सिंह,
महार ।

जे० सी०-167314, सूबेदार मन बहादुर मगर
गोरखा राइफल (फंटीअर फोर्स) ।

जे० सी०-175474, सूबेदार कुल प्रसाद पुन,
गोरखा राइफल ।

जे० सी०-173706, सूबेदार रण सिंह वर्मा,
सिगनल्स ।

जे० सी०-4161014, नायब सूबेदार रूप राम
यादव, कुमाऊं (मरणोपरांत) ।

एन० आई० ए०-1255187, नायब सूबेदार जरनैल
सिंह, आर्टिलरी (मरणोपरांत) ।

जे० सी०-218027, नायब सूबेदार विनेश चन्दा,
कुमाऊं ।

जे० सी०-224594, नायब सूबेदार दल बहादुर
राणा, गोरखा राइफल (फंटीअर फोर्स) (मरणोपरांत) ।

13732696, हवलदार अब्दुल रशीद, जम्मू और
कश्मीर राइफल (मरणोपरांत) ।

2766678, हवलदार त्रिरामर महाड मखाराम,
मराठा लाइट इंफैंट्री (मरणोपरांत) ।

4460396, हवलदार रोशन सिंह, सिख लाइट
इंफैंट्री ।

3975129, हवलदार रमेश चंद, डोगरा (मरणोपरांत)

13672789, हवलदार निसि दास, गार्ड्स
(मरणोपरांत) ।

14331322, हवलदार जरनैल सिंह, आर्टिलरी ।

9214417, कंपनी हवलदार मेजर भगवान दास,
महार ।

2980939, नायक राजेन्द्र सिंह, राजपूत ।

2779140, नायक वाघ भगवान शंकर, मराठा
लाइट इंफैंट्री (मरणोपरांत) ।

5448754, नायक मोहन सिंह गुरूंग, गोरखा
राइफल (फंटीअर फोर्स) (मरणोपरांत) ।

13961495, नायक परिचर्या सहायक असगर अली, सेना
चिकित्सा कोर (मरणोपरांत) ।

4173368, लांस नायक महाबीर प्रसाद, कुमाऊं
(मरणोपरांत) ।

2982620, लांस नायक जिया उल्लाह, राजपूत
(मरणोपरांत) ।

13682424, लांस नायक आनन्द सिंह, गार्ड्स
(मरणोपरांत) ।

4260975, लांस नायक देवेन्द्र प्रसाद सिंह, बिहार
(मरणोपरांत) ।

13750163, लांस नायक बलविन्दर सिंह, जम्मू
और कश्मीर राइफल ।

13744326, लांस नायक चमन लाल, जम्मू और
कश्मीर राइफल ।

2673778, लांस नायक विक्रम जीत, ग्रेनेडियर्स ।

13682120, लांस नायक पुष्कर सिंह, गार्ड्स
(मरणोपरांत) ।

2779130, लांस नायक शिवराम विश्वनाथ चौगुले, मराठा
लाइट इंफैंट्री (मरणोपरांत) ।

2478460, लांस नायक गुरदीप सिंह, पंजाब ।

2984580, सिपाही शिवाजी राम, राजपूत
(मरणोपरांत) ।

2483301, सिपाही मुखविन्द सिंह, पंजाब ।

13895110, सिपाही जगमाल राम, सेना सेवा कोर ।

3986503, सिपाही बलजीत सिंह राना, डोगरा
(मरणोपरांत) ।

3991313, सिपाही राकेश कुमार, डोगरा
(मरणोपरांत) ।

4269129, सिपाही नरेश किसपोट्टा, बिहार
(मरणोपरांत) ।

4069945, राइफलमैन मोहन सिंह, गढ़वाल
राइफल ।

13746694, राइफलमैन किशोरी लाल, जम्मू और कश्मीर राइफलस (मरणोपरान्त)।

4071461, राइफलमैन मतबर सिंह, गढ़वाल राइफलस।

13750096, राइफलमैन सुधीर कुमार थापा, जम्मू और कश्मीर राइफलस।

2680564, ग्रेनेडियर जगबीर सिंह ग्रेनेडियर्स।

15362802, सिगनलमैन दयानंद, सिगनलस (मरणोपरान्त)।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

सं० 145-प्रेज/94-राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसरों/कर्मिकों को उनकी असाधारण कर्तव्यपरायणता एवं साहसिक कार्यों के लिए "नौसेना मेडल/नेवी मेडल" प्रदान करने का महर्ष अनुमोदन करते हैं :-

1. कमांडर जीवन अयोति वर्मा (01819-एच)।
2. लेफ्टिनेंट राजीव रावल (03282-एच)।
3. लेफ्टिनेंट रूपन बेम्बे (03361-एन)।
4. लेफ्टिनेंट अशोक कुमार भोक्ता (03170-बी)।
5. बालामुब्रामणियन मोहन एल० एस० सी० डी०-II (162696-भार)।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

सं० 146-प्रेज/94-राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसरों/कर्मिकों को उनकी असाधारण कर्तव्यपरायणता एवं साहस के लिए "वायुसेना मेडल एयर फोर्स मेडल" प्रदान करने का महर्ष अनुमोदन करते हैं :-

1. विंग कमांडर मुकेश भंडारी (13380) उड़ान (पायलट)।
2. स्कवाड्रन लीडर कल्याण पलित (15409) उड़ान (पायलट)।
3. फ्लाइट अफसर संजय मलिक (20501) उड़ान (पायलट)।

गिरीश प्रधान
निदेशक

दिनांक 8 सितम्बर, 1994

सं० 147-प्रेज/94-इस सचिवालय की अधिसूचना सं० 33-प्रेज/79, दिनांक 26 जुलाई, 1979 में प्रकाशित अग्रता सूची में राष्ट्रपति द्वारा अनुमोदित निम्नलिखित संशोधनों को सामान्य जानकारी के लिए अधिसूचित किया जाता है :-

(क) अनुच्छेद 9 के पश्चात्, एक नया अनुच्छेद, अर्थात् अनुच्छेद 9क, निम्नलिखित रूप में शामिल किया जाए :-

"9क. मुख्य निर्वाचन आयुक्त।
भारत के नियंत्रक तथा महालेखापरीक्षक"

(ख) अनुच्छेद 11 में :-

"मुख्य निर्वाचन आयुक्त" और
"भारत के नियंत्रक तथा महालेखापरीक्षक
(कम्पट्रोलर एण्ड आडिटर जनरल)"
प्रविष्टियां हटा दी जाएं।

गिरीश प्रधान,
निदेशक

वस्त्र मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 11 अगस्त, 1994

संकल्प

सं० ई-11011(5)/90-हिन्दी-वस्त्र मंत्रालय के दिनांक 15-12-1992/के संकल्प सं० ई-11011(5)/90-हिन्दी में निम्नलिखित परिवर्तन किया जाता है :-

1. क्रम सं० 2 पर श्री शंकर दयाल सिंह, संभव सदस्य (राज्य सभा) के स्थान पर डा० (श्रीमती) चन्द्र कला पाण्डेय, संभव सदस्य (राज्य सभा) पढ़ा जाए।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी राज्य सरकारों और संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों, प्रधानमंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, योजना आयोग, राष्ट्रपति सचिवालय, भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, केन्द्रीय राजस्व के महालेखाकार और भारत सरकार के सभी मंत्रालय तथा विभागों को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आमकी जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

बी० एल० शर्मा,
संयुक्त सचिव

मानद संतोष सिंह संघालय

जल संसाधन मंत्रालय

(संस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 25 जुलाई 1994

नई दिल्ली दिनांक 9 अगस्त 1994

संकल्प

संकल्प

नं० 2-6/94-हिन्दी—संस्कृति विभाग का हिन्दी सलाहकार समिति के पुनर्गठन संबंधी संकल्प सं० 2-2/92-हिन्दी दिनांक 4-8-93 में आंशिक संशोधन करते हुए, उसमें निम्नलिखित संशोधन/परिवर्तन किए जाने हैं :—

(क) क्र० सं० 5 पर श्रीमती वीणा वर्मा के स्थान पर श्री ईश दत्त यादव, संसद-सदस्य (राज्य सभा) का नाम प्रतिस्थापित किया जाए।

(ख) क्र० सं० 30 पर निदेशक (प्र० शा०) के स्थान पर उप सचिव (हिन्दी) जो सदस्य-सचिव होंगे, का नाम प्रतिस्थापित किया जाए।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति समिति के सभी सदस्यों, सभी राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासनों, प्रधान मंत्री के कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, राष्ट्रपति सचिवालय, संसदीय राजभाषा समिति, भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक और भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प आम जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

अशोक वाजपेयी, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 1994

No. 141-Pres/94—The President is pleased to approve the award of 'Kirti Chakra' for acts of conspicuous gallantry to :—

3971721 Havildar Madan Sarup,
Dogra

(Posthumous)

(Effective date of the award—11 October 1993)

On 11th October 1993, 7 Dogra carried out cordon and search operation in five villages in Baramulla district of Jammu and Kashmir. At approximately six fifteen in the morning hours while 'A' Company was moving into village Zandpal, a group of militants were noticed moving south west of Zandpal, in the general area of Poshkar heights. Immediately a party under Havildar Madan Sarup was launched to intercept and apprehend them.

Leading his detachment from the front, Havildar Madan Sarup started moving up the Poshkar heights. The five militants who were in a dominating position, instantly opened accurate and heavy automatic fire on his party. Showing exemplary leadership and extra-ordinary courage, Havildar

सं० 2/4/91-हिन्दी—भारत सरकार, जल संसाधन मंत्रालय ने सिविल विधियों पर पुस्तकें मूलतः हिन्दी में लिखने के लिए प्रोत्साहन देने की पुरस्कार योजना के सम्बन्ध में इस मंत्रालय के दिनांक 28-9-1992 के सम-संयुक्त संकल्प के पैरा 15 अर्थात् मूल्यांकन समिति में निम्नलिखित का नाम जोड़ने का निर्णय लिया है :

पैरा 15 को क्रम संख्या 2 के रूप में "श्री आर०एस० गुप्ता, गैर-सरकारी सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति जल संसाधन मंत्रालय-सदस्य" जोड़ दिया जाये तथा "उसमें आगे की क्रम संख्याओं को तदनुसार बदल दिया जाये।"

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी राज्य सरकारों तथा संघ राज्य प्रशासनों एवं राज्य प्रशासनों, राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधानमंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक और भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों को भेज दी जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प जन-साधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

एन० सूर्यनारायणन,

आयुक्त (नीति व आयोजना)

Madan Sarup advanced through a veritable hail of bullets and single handily shot dead two militants. Fire from the remaining militants intensified. Ignoring this, Havildar Madan Sarup continued to lead the assault towards the militants. While closing in, he killed a third militant, but received a gun shot wound from another militant's fire. Disregarding his injury, with a super human effort, the gallant Non Commissioned Officer continued towards the remaining militants and with a last burst from his weapon killed the fourth militant. In the exchange of fire, Havildar Madan Sarup received yet another gun shot wound on the chest, but still continued to move towards the fifth militant who was fleeing up the heights. This last militant was chased and shot dead by Lance Naik Budhi Singh. At about seven fifteen hours in the morning Havildar Madan Sarup succumbed to his injuries. Due to his exemplary leadership, outstanding courage and spirit of self sacrifice beyond the call of duty, five hard-core militants were killed and five AK-47/56 rifles were captured, along with large quantities of ammunition, magazine and hand grenades.

Havildar Madan Sarup, thus, displayed conspicuous valour, dogged determination and made the supreme sacrifice in his fight against the militants.

G. B. PRADHAN,
Director

No. 142-Pres/94.—The President is pleased to approve the award of 'Bar to Shaurya Chakra' for acts of gallantry to :—

Captain Suresh Radhakrishnan,
(IC-50427), SC,
Rajputana Rifles.

(Effective date of the award—23 September 1993)

On 23th September 1993, 11 Battalion Rajputana Rifles was tasked to carry out cordon and search operations of village Athabut in district Baramulla of Jammu and Kashmir. The village is surrounded by mountains and dense forest from three sides. Troops had to walk for four hours in order to approach and cordon the village from different directions simultaneously. The cordon was to be effective at 0915 hours, same day. At around 0915 hours, Captain Suresh Radhakrishnan saw a group of armed militants at approximately 500 metres away moving up through a nallah trying to make their way out of cordon. Captain Suresh Radhakrishnan with his party ran after the militants in the nallah who were firing intermittently at them. They closed in with the militants and challenged them to surrender but they were answered with a volley of bullets. This led to heavy exchange of fire between the militants and the troops. Two militants were killed on the spot who were later identified as Pakistan trained militants of banned Jihad Force. At this moment, the other three militants who were still firing from behind the boulders threw six grenades towards the party of Captain Suresh Radhakrishnan, which led to multiple splinter injuries to him and six Other Ranks. Undeterred by the multiple splinter injuries and in spite of bleeding profusely, he threw a grenade at the militants and crawled towards the boulder with complete disregard to his own safety. From there, he single handedly killed two militants. This action of Captain Suresh Radhakrishnan inspired his men to crawl ahead and encircle other militants which led to killing of two more militants thereby recovering three rifles AK-56 with large quantity of ammunition and explosives.

Captain Suresh Radhakrishnan, SC, thus, displayed conspicuous courage, devotion to duty and true leadership.

G. B. PRADHAN,
Director

No. 143-Pres/94.—The President is pleased to approved the award of 'Shaurya Chakra' to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. Smt. Amrik Kaur, Amritsar,
Punjab.

(Effective date of the award—02 May 1991).

On the night of 2 May, at 11.45 PM four groups of terrorists jointly attacked the house of Smt. Amrik Kaur with rocket launchers, hand grenades, bombs and a number of fire-arms. Smt. Amrik Kaur and her family opened fire on the terrorists in self defence; and fought for four hours to ward off the terrorist attack. Due to the shelling of bombs, hand grenades and firing by terrorists, Smt. Kaur along with her daughter and son got injured.

On 12-9-1991, the husband of Smt. Amrik Kaur, her son Shri Nishan Singh and their servant Shri Mukhtar Singh were coming to their house on a tractor after ploughing their fields. Smt. Amrik Kaur was following them on a jeep with her gunman. The terrorists who were hiding in the bushes opened fire on Shri Subeg Singh, husband of Smt. Amrik Kaur, and their servant Shri Mukhtar Singh. Though Shri Nishan Singh, son of Smt. Amrik Kaur escaped from the attack by of the terrorists, the terrorists killed Shri Subeg Singh and Shri Mukhtar Singh, who were caught unaware. Since then Smt. Amrik Kaur has been fighting with the terrorists incessantly. She has killed 18 wanted terrorists so far, and has succeeded in persuading 24 prominent terrorists to surrender to the police. In all, she has been attacked by the terrorists 26 times, but with her indomitable courage, she has defied those attacks.

Smt. Amrik Kaur has, thus, shown rare courage and tremendous spirit in defying the terrorists at great personal risk.

2. Shri Kaushik Chatterjee,
Chief Engineer Officer,
M.T. Zakir Hussain. (Posthumous)

3. Shri Suryam Duvuri,
Third Engineer Officer,
M.T. Zakir Hussain. (Posthumous)

(Effective date of the award—14 November 1991).

On the morning of 14 November, 1991, a fire broke out in one of the unoccupied cabins of the vessel M. T. Zakir Hussain and spread rapidly with the result that the entire ship was engulfed. While the vessels officers and crew were fighting the fire from outside the accommodation area, Shri Kaushik Chatterjee, the Chief Engineer Officer along with Shri Suryam Duvuri, the Third Engineer Officer, realizing the gravity of the situation and despite grave risk to their own lives went down into the engine room through the funnel entrance to start the generator and fire pump and thus to enable the ship's personnel to fight the fire effectively. Their timely action contributed substantially towards the subsequent fire fighting operations. Unfortunately, they were prevented by fire and resultant heat and smoke from coming out of the engine room, and both lost their lives while attending to the call of duty.

Shri Kaushik Chatterjee, and Shri Suryam Duvuri, thus, exhibited exemplary courage and dedication to duty in their attempt to extinguish the fire which broke out in the ship and made the supreme sacrifice of their lives in the process.

4. 2681133 Grenadier Sukhendra Singh Bhagel
Grenadiers.

(Posthumous)

(Effective date of the award—26 September 1992).

A joint cordon and search operation of village Warsun, Jammu and Kashmir was carried out by troops of 15 Grenadiers and 24 Rajput on 26 September 1992 in the Kashmir Valley. As the two columns came in the vicinity of the southern fringes of village Warsun they were fired upon with automatic weapons and RPG-7 by militants from two houses, one of them being a single storey house adjacent to a maize field. The area was quickly cordoned off. Grenadier Sukhendra Singh Bhagel, formed part of company quick reaction team. On coming under effective fire, the company commander divided his team into two groups. Grenadier Sukhendra Singh Bhagel was tasked to give covering fire to troops assailing the single storey house. The other house was tackled by 24 Rajput. When the company quick reaction team moved towards the single storey house from an exposed flank, they came under heavy automatic and RPG-7 fire from the adjacent maize field as well as from the house. The situation turned grave due to the firing from the field and the houses. The 24 Rajput suffered 1 killed and 7 wounded, and the advance of 15 Grenadiers quick reaction team was held up. Grenadier Sukhendra Singh Bhagel spotted a militant close by. He crawled towards the militant, and pounced upon him and killed him in close combat. While extricating himself, Grenadier Sukhendra Singh Bhagel was pounced upon him and killed him in close combat. While injuries in the chest and head, to which he succumbed. The killed militant was later identified as an Afghan Mujahideen. Grenadier Sukhendra Singh Bhagel, thus, displayed conspicuous bravery, exceptional courage and made the supreme sacrifice while fighting the anti-national elements.

5. Shri Harpal Singh,
Sambalpur, Orissa.

6. Shri Amarjit Singh,
Sambalpur, Orissa.

(Effective date of the award—8 December 1992).

On 8 December 1992, about 25—30 students set a fire an Orissa State Road Transport Bus in protest against the orders of the Supreme Court on the reservation issue. On seeing the mob of furious students, the driver and the conductor of the bus fled from the spot, abandoning the bus. As the agitated students were setting fire to the bus. Shri Harpal Singh and his brother Amarjit Singh, who were proceeding on their own business on a scooter happened to witness the incident. The students had broken the wind shields and window glasses

of the bus, and had also succeeded in partially burning its seats. The youth, both of whom knew how to drive heavy vehicles, endangering their own lives took the initiative, extinguished the fire, and rescued the bus from the agitated students by driving it to Ainthapalli Police Station despite resistance by the students. This brave act of Shri Harpal Singh and his brother, carried out at great personal risk prevented the mob from burning the bus, thus saving heavy loss to the public exchequer.

Shri Harpal Singh and Shri Amarjit Singh, thus, showed initiative, courage and highest civic sense and saved government property from total destruction.

**7. Squadron Leader Devender Singh Jain, (15016),
Flying (Pilot) .**

(Effective date of the award—17 February 1993).

Squadron Leader Devender Singh Jain was on the posted strength of a Jaguar Squadron.

During a Squadron detachment at Air Force station Jodhpur on 17 February 93, while at the take off point, he saw a MIG 21 Bis aircraft crash just outside the perimeter fence, but he did not see the pilot eject. He at once transmitted the details to the air traffic control on radio. He then switched off his aircraft, jumped out and rushed to the crash site after negotiating the double barbed wire airfield fencing and the brimming sewerage drain just outside it. He was the first Air Force personnel to reach the crash site. Despite an imminent fire hazard due to a large amount of fuel that had spilled around the crashed aircraft, near its smouldering tail portion. Squadron Leader Jain, along with a civilian, managed to extricate the incapacitated pilot from under the wreckage, and provided initial first-aid. He then selected and cleared a site for the rescue helicopter to land, marshalled the crew to a safe landing, and then assisted in putting the injured pilot into the helicopter.

Squadron Leader Devender Singh Jain showed outstanding presence of mind, situational awareness and firm resolve in rescuing a fellow officer from the crashed aircraft.

**8. 13736095 Havildar Partap Singh, (Posthumous)
Jammu and Kashmir Rifles.**

(Effective date of the award—11 June 1993).

On 11 June 1993 a quick reaction team of one Junior Commissioned Officer and 22 Other Ranks of 8 Jammu and Kashmir Rifles was moving from Panzgam to Vilgam district Kupwara, Jammu and Kashmir. At approximately 0915 hours near village Duhom the column was ambushed and came under heavy fire from about 30 militants including some fanatic non Kashmiri militants.

Havildar Partap Singh was driving the leading vehicle when the quick reaction team was ambushed. Two Other Ranks were injured in the initial militant firing. Any action/movement at this moment in the face of Universal Machine Gun fire would have resulted in very heavy casualties. Realising the critical situation, Havildar Partap Singh, with total disregard to his personal safety, immediately counter attacked the hostile Universal Machine Gun position. In spite of having been injured in the chest, Havildar Partap Singh, unmindful of the injury, charged through the militant fire and in the process killed two militants and silenced the Universal Machine Gun and captured one AK-56 before finally succumbing to his injuries. Later on intercepts of militants radio communication indicated that the dead militants were Pakistani Nationals. Drawing inspiration from the valiant act, other troops broke the ambush killing one more militant and recovering a total of one RPG, one Universal Machine Gun and two rifles, besides ammunition. This action of Havildar Partap Singh not only helped in defeating the ambush which resulted in the militants fleeing, but also resulted in saving the lives of many of his comrades.

Havildar Partap Singh, thus, displayed conspicuous bravery, courage and laid down his life fighting the militant.

**9. Mohammed Subrati, (Posthumous)
Delhi.**

(Effective date of the award—27 June 1993).

On 27 June 93 and at about 1.00 five dacoits armed with fire-arms looted House No. 2207, Gali Hinga Beg, Tilak Bazar, Delhi belonging to Shri Daya Nand Gupta. On hearing the cries of Shri Gupta's daughter, Mohammed Subrati, a neighbour who was having lunch in his own house, rushed to the house of Shri Gupta, and intercepted and challenged the dacoits who were coming out from his house. Mohammed Subrati succeeded in over-powering one of the dacoits at grave danger to his own life. The dacoits in order to secure the release of their companion shot dead Mohammed Subrati.

Mohammed Subrati, thus, exhibited exemplary courage in apprehending the dacoit and in the process made the supreme sacrifice of his life.

**10. 13745038 Lance Naik Krishan Singh, (Posthumous)
Jammu and Kashmir Rifles.**

(Effective date of the award—5 July 1993).

On receiving of information that a group of militants were attempting to infiltrate in the general area of Katwari Daimk of Jammu and Kashmir, a number of patrols were sent out to cordon off the area to search and destroy the insurgents. Lance Naik Krishan Singh of 1 Jammu and Kashmir Rifles was a member of one such patrol led by Subedar Som Nath.

On 5 July, 1993, during the course of the search, the party came under intense automatic fire of a Universal Machine Gun and AK' 56 rifles. While closing in with the militants, Subedar Som Nath was severely injured by a grenade thrown by them. On seeing this, Lance Naik Krishan Singh charged forward firing from his rifles and killed two anti-national elements. He then began moving towards the wounded Subedar Som Nath. However, before he could reach him, a third militant concealed behind the Universal Machine Gun position lobbed a grenade, which exploded just behind Lance Naik Krishan Singh, killing him on the spot.

Lance Naik Krishan Singh, thus, displayed great courage, and made the supreme sacrifice in his valiant attempt to aid his comrade in action.

**11. 13743718 Lance Naik Naresh Kumar, (Posthumous)
Jammu and Kashmir Rifles.**

(Effective date of the award—15 July 1993).

On 15 July 1993, while on duty in Kiatsan area of the Baramulla district in Jammu and Kashmir at about seven twenty in the morning. Lance Naik Naresh Kumar saw a group of seven to eight militants trying to break cordon and run towards the hills. Since they did not stop on being challenged. Lance Naik Naresh Kumar opened fire at the first militant, who had by then managed to come within 10 metres of his position. The militant was hit and succumbed to his injuries later. Immediately thereafter, the remaining militants took cover behind the rocks and boulders and began to fire. Lance Naik Naresh Kumar alongwith Havildar Lekh Raj crawled uphill and managed to block the escape route of the militants. Then, they saw a militant who had started slowly moving downhill to escape. Lance Naik Naresh Kumar charged the militant at once and shot him dead. After a few minutes the soldiers heard cries of an injured militant requesting the troops to accept his surrender and to save his life. Moving stealthily, Lance Naik Naresh Kumar closed towards the militant to help him. Just then, one of the Militants who had taken cover opened fire with AK rifle at a close range. The fire hit Lance Naik Naresh Kumar on his chest. He collapsed and succumbed to his injuries a few minutes later.

Lance Naik Naresh Kumar, thus, displayed rare courage, dogged determination and made the supreme sacrifice in his fight against the militants.

12. G/036666K Operator Excavating Machinery,
Ram Gopal Singh. (Posthumous)

(Effective date of the award—15 July 1993).

OEM Ram Gopal Singh was deployed on slide clearance with his dozer at Pungra-Moya-Nimi Road in Nagaland.

On 15 July 93, at about 0815 hrs. a road block occurred at km 53.850 due to heavy land slide. OEM Ram Gopal Singh was deployed to clear the slide with his dozer. All of a sudden, another huge slide descended from the up-hill slope trapping OEM Ram Gopal Singh. Despite being hit by rolling stones he was seen to be striving hard to save the Dozer. Subsequently, he got buried under debris and rolling stones of the slide. The concerned efforts made by other personnel engaged on slide clearance to retrieve OEM Ram Gopal alive from the debris went in vain, and unfortunately his life could not be saved. As a result OEM Ram Gopal Singh died on the spot, but his efforts even when breathing his last, saved the dozer which suffered only minor damage.

OEM Ram Gopal Singh made the supreme sacrifice while executing his task, risking his life to ensure that road communication is restored at the earliest.

13. 411352 Rifleman Krishna Kumar Singh.
Assam Rifles (Posthumous)

(Effective date of the award—16 August 1993)

Rifleman Krishna Kumar Singh was the leading scout of a special patrol which was tasked to assault a National Socialist Council of N. ealand hide out in the general area of Chahong Khunao. On 16 August 1993 as they were assaulting the hide out, Rifleman Krishna Kumar Singh was hit by hostile bullets in the abdomen. In spite of this, he kept on firing with his weapon while moving towards the undergrounds. When he was physically unable to run, he fell to the ground and continued to crawl towards the undergrounds, firing at them. He was hit by another bullet, which incapacitated him. Undeterred he continued to fire at the insurgents and then lobbed a grenade at them. Subsequently, Rifleman Krishna Kumar Singh succumbed to his bullet injuries. His action led to the capture of one underground, five weapons, a large quantity of ammunition and explosives.

Rifleman Krishna Kumar Singh, thus, displayed courage, and determination in his fight against the insurgents, and made the supreme sacrifice.

14. Major Vajinder Singh Sahi (IC-48397),
Dogra (Posthumous)

(Effective date of the award—22 August 1993)

On 22 August 1993, a patrol of 15 Dogra detected a trail on the Zand Dudi Ridge which was suspected to be of infiltrating militants. Based on this information, a quick reaction team under Major Vajinder Singh Sahi was sent to point 3369 on the Zand Dudi Ridge to establish contact with the anti national elements. While approaching the designated point his team came under heavy machine gun fire from the militants. Major Sahi took stock of the situation and returned the fire. To evict the militants he moved a part of his team to one flank, and himself pressed forward with the other group to the top of point 3369, forcing the militants off this dominating position. As darkness set in, the search was suspended and intermittent firing continued throughout the night. The search was resumed on 23 August on the western slopes where the anti-national elements were hiding behind big boulders. Due to the thick foliage and the natural cover provided by the rocks it was difficult to dislodge the militants, but the quick reaction team pressed on relentlessly. In the afternoon the search was resumed with the help of a tracker dog. However, the two leading scouts were killed by sniper fire, and despite all efforts the sniper, who had taken position behind a crevice could, not be dislodged. Forward movement was not possible as it attracted accurate fire from the sniper. So the 84 mm RL

was called for. Before the RL arrived darkness had set in so the area was dominated by fire, to prevent the anti-national elements from escaping. Next morning, Major Sahi maneuvered into a position from where he could engage the sniper and kill him. The search was resumed and large quantities of arms and ammunition recovered. The militants were now dispersed and hiding in the thick jungles on both sides of the ridge. Six militants were spotted in the jungles on 25 August 1993. Major Vajinder Singh Sahi moved from the north to eliminate them and pressure was applied from the south to block their escape. After two days all 6 anti-national elements were killed. In this operation lasting 13 days, Major Vajinder Singh Sahi relentlessly pursued the anti national elements which resulted in 18 of them being killed and huge quantities of arms and ammunition being captured including 20 AK 47/56 rifles, 3 Universal Machine Guns, 4 sniper rifles, 2 grenade launchers, 23 pistols, 5 radio sets and over 5000 rounds of ammunition. In his bid to prevent further infiltration, the officer was laying mines near the Line of Control on 7 September 1993 when a mine exploded killing him on the spot.

Major Vajinder Singh Sahi, thus, displayed conspicuous gallantry and made the supreme sacrifice of his life in the finest traditions of the Indian Army.

15. 2784930 Sepoy Raundhal Bajirao Dharma,
Maratha Light Infantry (Posthumous)

(Effective date of the award—15 September 1993)

On 15 September 1993, 6 Maratha Light Infantry launched a cordon and search operation in village Narbal, Jammu and Kashmir. At about twelve noon a search party of 'B' company was approaching a house at the western end of the village. Sepoy Raundhal Bajirao Dharma, suddenly encountered a militant crouching in the dense maize crop adjacent to the house. The militant taking cover of the crop fled towards the house. Sepoy Raundhal Bajirao Dharma opened fire on the militant. Though shot in his lower limbs, the latter managed to crawl into the house, take up position at a window, and open fire on Sepoy Raundhal Bajirao Dharma. In spite of being subjected to a heavy volume of fire by the militants, the brave Sepoy quickly advanced upto the house, and displayed exemplary courage and initiative, attempted to storm the house. The courageous dash by the young soldier resulted in his receiving a burst of fire in the chest. Shouting the Maratha war cry, Sepoy Raundhal Bajirao Dharma continued his valiant charge firing at the militant. He received another burst of fire in the chest and fell to the ground. The gallant soldier still continued to engage the militant, till other parties converged on the house, when he breathed his last. Sepoy Raundhal Bajirao Dharma made the ultimate sacrifice in this action, which resulted in the killing of the company commander of 'Hizbul Mujahideen' and recovery of one AK 56 rifle, 3 magazines, 80 rounds, 1 Argus Grenade and 1 Russian Grenade.

Sepoy Raundhal Bajirao Dharma, thus, displayed conspicuous gallantry and indomitable spirit in his fight against the anti-national elements.

16. IC-184295 Subedar Shaikh Bashir Hassan,
Maratha Light Infantry (Posthumous)

(Effective date of the award—19 September 1993)

Subedar Shaikh Bashir Hassan was a platoon commander in B company of 3 Rashtriya Rifles. On 19 September 1993, the company was tasked to perform road opening duties on the Acchabal-Daksum road in Jammu and Kashmir. While approaching Zalagam, suspicious movement was noticed in paddy fields north of the road and under orders of his company commander, Subedar Shaikh Bashir Hassan deployed his platoon along the road. Simultaneously, heavy volume of anti-national elements fire commenced on the party. Shouting encouragement to his

command and with total disregard to his own safety, the Junior Commissioned Officer led his platoon through a heavy volume of hostile fire, and closed in upon the militants upto a distance of 50 metres. The Junior Commissioned Officer then spotted a militant just 20 yards away, about to open fire on his men. He immediately charged at the militant and killed him. He, however, sustained fatal injuries in the process. In the continuing assault three more anti-national elements were killed.

Subedar Shaikh Bashir Hassan, thus, displayed valour, dogged determination and made the supreme sacrifice of his life in fight against the militants.

17. 4062063 Naik Madan Lal, (Posthumous)
Garhwal Rifles

(Effective date of the award—19 September, 1993)

Naik Madan Lal was a section commander in B company of 3 Rashtriya Rifle. On 19 September 1993, B company was tasked to perform road opening duties on Achabal-Daksum road (Jammu and Kashmir) and his section was in the leading platoon under Subedar Bashir Hassan.

When the leading elements reached Zalangam, indications of an ambush laid by anti-national elements made the company commander order deployment of the company. Soon there was a heavy volume of fire by anti-national elements hiding in a paddy field about 150-200 metres away. The leading platoon charged at the ambush and closed the militants within 50 metres. When his platoon commander succeeded in neutralizing an anti-national element, Naik Madan Lal, along with Lance Havildar Harinder Singh in a most dare devil action led his section through a heavy volume of fire and charged at a group of anti-national elements. In spite of suffering grave gun shot wounds, the brave soldier continued his charge, and the action led to the killing of one more militant, before he laid down his own life.

Naik Madan Lal, thus, displayed bravery, courage and spirit of self sacrifice.

18. Major Kochu Koshy Panicker NK (IC-43962),
Bihar

(Effective date of the award—19 September, 1993)

A company of 10 Bihar, commanded by Major Kochu Koshy Panicker NK, was conducting search of deserted Hindu houses at Chanderhom in district Baramulla of Jammu and Kashmir on 26 September, 1993. The area was cordoned off by another company whose troops had seen a militant running into the group of houses on the outskirts of the village. Major Kochu Koshy Panicker with a search team commenced the search from one side in a systematic and thorough manner. While conducting search of a triple storey deserted Hindu home, he was fired at by the militant holed up inside, resulting in grievous injury to his left arm. The officer jumped from the roof to the courtyard and fell. The militant threw a grenade near the officer. Though wounded, Major Kochu Koshy Panicker scrambled for cover but again suffered twenty four splinter injuries in his abdomen and chest. In spite of being seriously wounded, Major Kochu Koshy Panicker refused to be evacuated and continued to direct his troops. The militant was eventually killed. The officer thereafter fainted and was evacuated.

Major Kochu Koshy Panicker NK, thus, displayed strong will, dedication and courageous action, much beyond the call of duty.

19. 2585871 Havildar Sarthi Reddy Budupu,
Madras (Posthumous)

(Effective date of the award—4 October, 1993)

On 4 October 1993, cordon and search operations were launched in village Dobgah, tehsil Sopore, district Baramulla, Jammu and Kashmir. As the cordon was being established, the troops were fired upon by anti-national elements from some houses in the outskirts of the village from six

thirty in the morning. Havildar Sarthi Reddy Budupu volunteered to go ahead and with a section strength of troops, advanced to identify and cordon off the houses from which the fire was coming. As the section came within sight of the house, the militants suddenly opened up a heavy volume of accurate and effective fire upon them. Havildar Sarthi Reddy Budupu, with exemplary presence of mind and a display of rare courage, retaliated immediately, firing back at the militants. He then asked his section to provide covering fire to him, as he would go further ahead in order to bring down effective fire upon the militants from a suitable position. Simultaneously an enemy sniper, who was covering the withdrawal of his comrades from a concealed position of vantage fired and killed Havildar Sarthi Reddy Budupu on the spot.

Havildar Sarthi Reddy Budupu, thus, displayed gallantry and rare courage and sacrificed his life fighting the anti-national elements.

20. Second Lieutenant Shailendra Vikram Kumar
(IC-51879), (Posthumous)
Guards

(Effective date of the award—11 October, 1993)

Second Lieutenant Shailendra Vikram Kumar was a platoon commander in Bravo company of 5 Guards. The unit had launched an operation in village Porhupet in Handwara tehsil of Kupwara district of Jammu and Kashmir on 11 October, 1993.

During the course of the operation heavy fire was drawn from a group of anti-national elements including few foreign mercenaries. Second Lieutenant Shailendra Vikram Kumar managed to push these militants into a group of approximately five to six houses and trap them. The officer, thereafter, reorganised his sub unit and effectively dominated these suspected houses and personally led a team to clear the houses one by one from a flank. After clearing three of the houses, effective fire was drawn from one of the remaining houses. One of the leading scouts of his party was fatally hit by a bullet. Showing utter disregard to his personal safety, the officer rushed forward and evacuated the body to safe house. He thereafter subjected the house to intense firing from 84mm Rocket Launcher and other supporting weapons. The two militants who had by now been injured managed to fire a short burst with their automatic weapon which injured the officer. Even then he engaged the militants with his weapon and killed one of them. He later succumbed to his injuries.

Second Lieutenant Shailendra Vikram Kumar, thus, displayed rare courage, devotion to duty and made the supreme sacrifice in fighting the anti-national elements.

21. Captain Ashish (SS-34942),
Maratha Light Infantry

(Effective date of the award—15 October, 1993)

On 15 October, 1993 at 1415 hours number 1 platoon of 'A' Company of 19 Maratha Light Infantry was tasked to lay an ambush in the jungle of Tekia Lash Shah in Kashmir Valley. The platoon was commanded by Capt. Ashish. When the ambush party reached village Nahama, the first vehicle in which Capt Ashish was travelling came under effective fire from a house. Capt Ashish while under heavy fire from close range ordered his platoon to cordon the area. The anti-national elements on being effectively engaged by the troops ran for cover. Capt Ashish who had only three other persons in his party saw three anti-national elements running away firing on the move. Seeing the gravity of the situation Capt Ashish led a charge, firing from the hip position, and cornered the militants in a vegetable garden. At approximately 1520 hours Capt. Ashish and a terrorist saw each other. In the ensuing fire Capt. Ashish suffered bullet injury on right groin, but the terrorist was killed on the spot. Later he was identified as Abdul Mazid Mir Commander in Chief of 'Al Burq'. Within a few seconds another militant, who was covering the first, fired at Capt Ashish at close range. The agile Captain

ducked and while falling fired a burst on him, thereby killing him instantaneously. He was later identified as the body guard of Abdul Mazid Mir.

Captain Ashish, thus, displayed bravery, courage and devotion to duty in his fight against the anti-national elements.

22. Second Lieutenant Mukesh Anand, (Posthumous)
(IC-52193), Army Service Corps.

(Effective date of the award—27 October, 1993)

Second Lieutenant Mukesh Anand attached with 12 MAHAR was the Officer-in-charge of a tactically important and difficult post along the Line of Control in Kashmir:

On 27 October 1993, civil porters from the unit base were sent to this post carrying material for construction of permanent defenses. When these porters did not arrive till four thirty in the afternoon, Second Lieutenant Mukesh Anand first checked from the unit about the whereabouts of the porters, and fearing the worst, then decided to lead a patrol to search for them. Despite fading light, mountainous terrain, thick jungle and dense undergrowth on the route, which lay very close to the Line of Control, he led the patrol with total disregard to the risk involved. When the patrol party had gone about 900 metres, some anti-national elements/enemy troops hiding in the undergrowth near the Line of Control, sprung an ambush on the party, resulting in a fierce exchange of fire, in which Second Lieutenant Mukesh Anand was hit by some bursts of a UMG and AK-47 rifle. The officer continued to engage the enemy despite severe injuries in the chest, and directed the NCO with the Light Machine Gun to retaliate. He himself rushed forward, firing from the hip till he was hit in the head. This supreme sacrifice by the young officer was in the highest traditions of the Indian Army.

Second Lieutenant Mukesh Anand, thus, displayed bravery, courage and spirit of self sacrifice.

23. 4559906 Sepoy Mojindra Vijay Shantilal, (Posthumous)
Mahar.

(Effective date of the award—27 October, 1993)

Sepoy Mojindra Vijay Shantilal of 12 Mahar was located at tactically important and difficult post of Hump in Tangdhar Jammu and Kashmir.

On 27 October, 1993, the post commander Second Lieutenant Mukesh Anand ordered the post Junior Commissioned Officer to get some ORs immediately as he was going to search for the civil porters who had left base in the morning with defence construction material but could not reach the post till 1630 hours. Sepoy Mojindra Vijay Shantilal volunteered and insisted that he will also go with this party, knowing very well that the route was passing through a very difficult terrain close to the Line of Control. When the patrol party had hardly gone about 900 metres, some anti-national elements/Enemy Troops hiding in the undergrowth near the track sprung an ambush on this party which resulted in a fierce exchange of fire in which, Second Lieutenant Mukesh Anand was hit and killed on the spot while Sepoy Mojindra Vijay Shantilal got one bullet in his chest. In spite of his severe injury, he kept engaging the men, moved forward with total disregard to his personal safety and lobbed a hand grenade at the anti-national elements/Enemies. At this very moment he got a direct hit of Universal Machine Gun in his arm and head and as a result he breathed his last.

Sepoy Mojindra Vijay Shantilal, thus, displayed bravery, courage and spirit of self sacrifice in his fight against the militants.

24. 2776573 Lance Havildar Laxman Bhavaku Oulkar,
Maratha Light Infantry. (Posthumous)

(Effective date of the award—12 November, 1993)

On 12 November 1993, 19 Maratha Light Infantry on specific information launched an operation of cordon and search in village Rowchha, Kashmir Valley. At three in the afternoon a search party commanded by Naib Subedar Kalburge Laxman Limbaji consisting of fifteen Other Ranks and five civilians was carrying out a search in Banpura Mohalla. An anti-national element threw a grenade on troops from the house of Ashraf Malla. Lance Havildar Laxman Bhavaku Oulkar who was a member of the search party sustained splinter injuries. After the troops cordoned the house the anti-national elements started firing from the house. Lance Havildar Laxman Bhavaku Oulkar, despite being badly wounded, crawled close to the door and lobbed two grenades into the house, and fired with his rifle. Two anti-national elements were killed and one was seriously wounded. The wounded continued to fire. Due to grenade explosions, the dry haystack caught fire. The anti-national element inside the house was asked to surrender but he refused. To flush him out an 84mm Rocket Launcher HE round was fired. The anti-national element moved out firing indiscriminately. At the door step he was shot dead by badly wounded Lance Havildar Laxman Bhavaku Oulkar. Lance Havildar Oulkar succumbed to his injuries at four thirty that afternoon. The anti-national elements killed were identified as Mushaq Battalion Commander, Fozaz Section Commander and Rivaz Ahmed Bhat, all three belonging to the Hizbul Mujahideen group. Lance Havildar Laxman Bhavaku Oulkar, thus, displayed bravery, courage and spirit of self sacrifice.

25. 3179896 Sepoy Devendra Kumar, (Posthumous)
JAT.

(Effective date of the award—16 November, 1993).

On 16 November 1993, Sepoy Devendra Kumar was travelling in the Commanding Officer's Jonga followed by two other vehicles, on a routine area patrol. On reaching the outskirts of village Pazzalpur (Gund Nasir) in Kashmir Valley, three armed militants opened fire, and then fled into the village. No sooner did the Janga stop, than Sepoy Devendra Kumar jumped out and ran after them. He cornered two militants against a wall which they could not scale, and in desperation they opened intense fire on him from barely 10 yards distance. Sepoy Devendra Kumar received gun shot wounds in the chest and abdomen. This fearless soldier, though mortally wounded, retaliated by emptying his magazine on them killing one of the militants. Sepoy Devendra Kumar was evacuated to the Base Hospital, where he breathed his last on the operating table.

Sepoy Devendra Kumar thus, displayed indomitable courage, and spirit of self sacrifice.

26. Second Lieutenant Pankaj Warikoo,
(IC-51782), Sikh

(Effective date of the award—20 November, 1993)

On 20 November 1993, operation 'COLD FURY' was launched by 2nd battalion, The Sikh Regiment in village Zoon Khorvan, Gaddam district Jammu and Kashmir, on specific information that armed militants including foreign mercenaries were operating in these areas. At about 0730 hours Second Lieutenant Pankaj Warikoo noticed two foreign mercenaries dressed in combat uniform attempting to sneak out of the cordon. Immediately Second Lieutenant Pankaj Warikoo using audacious initiative and daring closed in on them and a fierce encounter at short range followed with the well trained Afghan Mercenaries. Undaunted he kept engaging the militant himself, and simultaneously guided his party personnel into superior combat positions. Finding a militant barely 20 yards away from himself, Second Lieutenant Pankaj Warikoo displaying great presence of mind lobbed two hand grenades and kept the militants down. At this stage the second Afghan mercenary fired at him from a flank injuring him in the chest lower right

region. Despite being injured and bleeding profusely, he refused to be cowed down and in an act of exemplary courage and determination continued to engage both the militants and finally killed one of them. Despite his injured condition he continued to direct the fire onto the other mercenary who was subsequently chased and killed by Sepoy Ikbai Singh. By now due to excessive bleeding Second Lieutenant Pankaj Warikoo almost became unconscious and at 0900 hours he was evacuated by helicopter from a nearby make shift helipad to 92 Base Hospital. He was immediately operated upon and miraculously survived.

Second Lieutenant Pankaj Warikoo, thus, displayed courage, determination, initiative and leadership qualities of exceptionally high order.

27. 3388598 Sepoy Ikbai Singh, (Posthumous)
Sikh.

(Effective date of the award—20 November, 1993)

Sepoy Ikbai Singh was a member of a strategic stop during an operation against armed militants in village Zugu Khoryan, Badgam district, Jammu and Kashmir. At approximately 0640 hours the stop sighted two militants wearing combat dresses trying to sneak away. In the ensuing encounter one militant was killed by Second Lieutenant Pankaj Warikoo and the second militant managed to flee towards safe sanctuary of dense forests after inflicting gun shot wounds on the officer. Sepoy Ikbai Singh, on seeing his own officer critically wounded pursued the running militant who had started firing indiscriminately. With the closing gap the fleeing mercenary's bullets started whizzing past dangerously close and one of the bursts hit Sepoy Ikbai Singh on his chest. Undaunted by wounds sustained, this young soldier kept on the pursuit of killing the mercenary. The militant, an Afghan mercenary, managed to conceal himself behind boulders covered by thick foliage. However, Sepoy Ikbai Singh noticed this and he closed onto the mercenary. In an act of exemplary courage Sepoy Ikbai Singh charged on to the mercenary. In the ensuing encounter the mercenary was killed instantly. Later Ikbai Singh also succumbed to his injuries. One rifle AK 56, five magazines and 119 cartridges were recovered from the body of the slain mercenary.

Sepoy Ikbai Singh, thus, displayed conspicuous courage, devotion to duty and made the supreme sacrifice.

28. 4177217 Lance Naik Rai Singh, (Posthumous)
Kumaon.

(Effective date of the award—10 December, 1993)

On 10 December 1993, based on information provided by an apprehended anti-national element, 13 Kumaon launched a cordon and search operation in a village in Kupwara district of Jammu and Kashmir.

After establishing the cordon, at about seven in the morning various search parties started moving towards the village. At around seven thirty Lance Naik Rai Singh saw the barrel of a Universal Machine Gun protruding from above a fallen tree trunk scarcely 30 metres away. Realising at once that he had stumbled upon a militant hideout, and that if the Universal Machine Gun opened fire, it would inflict severe casualties on his comrades, Lance Naik Rai Singh charged at the hideout, with utter disregard for his personal safety, and shot dead the militant who was manning the Universal Machine Gun on the spot. Thereupon he saw another anti-national element hiding behind a tree and once again he opened fire and killed him on the spot. He was later identified as Ghulam Hassan alias Gauhar Ayub, battalion commander of "Hizbul Mujaahideen". Two other anti-national elements, however fired at Lance Naik Rai Singh and wounded him. He fell down unconscious but not before shooting dead yet another militant. Lance Naik Sathir Singh on seeing Lance Naik Rai Singh being fired upon by the anti-national elements, moved in and shot dead the remaining militant who was later identified as a non Kashmiri. Lance Naik Rai Singh was evacuated to the Base Hospital on 10 December 1993. However, he died of his wounds on 15 December, 1993.

Lance Naik Rai Singh, thus, displayed bravely and courage in the face of anti-national elements and made the supreme sacrifice.

29. Mate Mohinder Lal,
Bride

(Effective date of the award—19 December, 1993)

Mate Mohinder Lal (a retired Havildar from the Brigade of Guards) was employed by 58 Road Construction Company for surfacing work on the Kalai-Jhanger road in Naushera sector of Jammu and Kashmir.

On 19 December 1993, at around 0930 hours, he was returning home after receiving payment. Suddenly, he heard and felt the effects of a major blast. When he looked up, he saw an Army Jawan (later identified as Sepoy Surendra Yadav of 890 AT Coy) lying totally dazed in a pool of blood on a foot track about 10 metres away from the edge of the road, with one of his legs blown off and crying for help. Mate Mohinder Lal immediately realised that the accident was the result of an anti-personnel mine planted by anti-national elements. With his Army background, he realised that there would be more such devices in the area. Still he decided to go to the aid of the injured Sepoy.

Unmindful of the danger to his personal safety Mate Mohinder Lal, responded instantaneously to the anguished cries for help from the injured Sepoy Surendra Yadav. In the process of evacuating the injured soldier, Mate Mohinder Lal stepped on an anti-personnel mine and suffered grave injury. His left foot as blown off, resulting in the subsequent amputation of his left leg.

Mate Mohinder Lal, thus, displayed bravery, courage and compassion for a fellow human being.

30. Major Harinder Pal Singh Sandhu (Posthumous)
(IC-43475), Guards.

(Effective date of the award—23 December, 1993)

Major Harinder Pal Singh Sandhu was Officer Commanding Delta Company No. 1 Rashtriya Rifles Battalion. On 23 December, 1993 the company had been given rest. However, Major Harinder Pal Singh Sandhu maintained a quick reaction team and upon hearing that the Commanding Officer's party had been fired upon at approximately 11 AM. He rushed to Bijbiara township of Kashmir Valley from the western direction. The moment he approached the township he was fired at heavily, but managed to chase the anti-national elements, and take pressure off Commanding Officer's party. In the process of chasing militants Major Sandhu was hit by Universal Machine Gun burst. He succumbed to his injuries upon reaching the Medical Inspection Room.

Major Harinder Pal Singh Sandhu, thus, displayed exemplary courage and spirit of self sacrifice in his fight against the anti-national elements.

31. 14344443 Naik Lalan Prasad Kumar, (Posthumous)
Artillery

(Effective date of the award—25 December 1993)

On 25 December 1993, in the cordon and search operation conducted by 8 Mountain Artillery Brigade, Naik Lalan Prasad Kumar was detailed as Light Machine Gun gunner of No. 1 section of the platoon. The platoon was deployed to carry out search of militants in village Kunabal in Kashmir Valley. During the search, some hidden militants suddenly opened fire on the search party. The search party immediately cordoned the house. When the militants got surrounded in the house, one of them lobbed a hand grenade on the troops and ran out trying to break the cordon. The grenade fell very close to Naik Lalan Prasad Kumar, who tried to duck down but there was no space nor could he move to safety in the short time. He got seriously injured by the grenade splinters and started bleeding. Without caring for his injury, he immediately took

position and fired his Light Machine Gun on the militant. At this the militant changed direction and started running outside the village. Naik Lalan Prasad Kumar picked up his Light Machine Gun in an injured state and chased the militant for about 20 metres, and then shot him dead. Having killed the running militant, he brought back the Light Machine Gun to the original place and deployed again. Since he was bleeding profusely he was administered first aid but soon he succumbed to the injuries before evacuation to the Military Hospital.

Naik Lalan Prasad Kumar, thus, displayed bravery, courage and spirit of self sacrifice in his fight against the militants.

32. 2678080 Naik Tej Singh, (Posthumous)
Grenadiers

(Effective date of the award—14 January 1994)

At six thirty in the morning of 14 January 1994, 'A' company of 22 Grenadiers acting on information received established inner and outer cordons in village Chittargam district Pulwama, in Jammu and Kashmir, to raid five houses lodging militants. Naik Tej Singh who had established the inner cordon around one of the houses asked the hiding militants to come out. Instead the militants suddenly opened heavy fire on his party from the granary just beside the house. Naik Tej Singh and his party immediately took cover. Having seen that they had been surrounded, the militants tried to break the cordon, under the cover of fire from a General Purpose Machine Gun and AK 56 rifles, firing from underneath the granary. The first two militants who broke out firing were shot dead by Naik Tej Singh. The third militant seeing two of his accomplices already dead, made a desperate charge towards Grenadier Ajit Kumar. Naik Tej Singh seeing the life of his comrade in danger, with utter disregard of his personal safety, came out of cover to engage the militants more effectively, thus exposing himself. The militant immediately changed direction and fired at Naik Tej Singh, who too let out a burst from his AK 47 rifle, resulting in the death of the militant. During this encounter Naik Tej Singh received bullet injuries on his right leg, and above the abdomen. He fell down but kept on firing towards the granary, and successfully silenced the General Purpose Machine Gun. Though bleeding profusely, he declined to be evacuated. Naik Tej Singh apart from killing three hard core militants, endangered his own life to save his comrades. In this operation a total of five militants of the Hizbul Mujahideen group were killed and one apprehended. Naik Tej Singh who was evacuated to hospital succumbed to his injuries at three fifteen the same afternoon.

Naik Tej Singh, thus, displayed indomitable courage, dedication to duty made the supreme sacrifice of his life.

33. JC-478098 Naib Subedar Om Prakash. (Posthumous)
Rajput

(Effective date of the award—31 January 1994)

On 31 January 1994, 27 Rajput conducted operations in Villages Gujra, Rusripura and Daragam in district Bara-mulla in Jammu and Kashmir to apprehend militants and recover their weapons. Three militants were noticed running into the village Daragam. The village was immediately cordoned and a systematic search commenced.

At about 12 noon when one of the search parties entered a house, they were fired upon by a militant hiding there. One militant came out and surrendered. He informed the troops that the second militant, who was a deputy battalion commander of the dreaded 'Hizbul Mujahideen' group, had refused to come out. The holed up militant, instead of surrendering, started firing indiscriminately at the troops. Since troops fire was not having much effect due to the concrete structure of the house, it was decided to lob grenades through the windows of the house. Naib Subedar Om Prakash volunteered for this very risky assignment as the slightest exposure elicited heavy volume of fire from the militant who remained concealed well inside the room while firing through the windows. Disregarding his personal

safety, Naib Subedar Om Prakash stepped out from behind cover, and in a swift motion ran upto a window and lobbed a grenade. As he was running back to take cover, the militants fired, but Naib Subedar Om Prakash got behind cover without injury. A few minutes later, he again closed in and lobbed another grenade through a window of the house. The militants again fired at him but could not cause any injury. After carefully ascertaining the exact location of the militant inside the house, Naib Subedar Om Prakash moved to the window of the house once again and lobbed yet another grenade. As he was running back, the militant fired from the same window. This time Naib Subedar Om Prakash sustained a gun shot wound in his left upper chest region. The grenade exploded in the room and the militant was injured which helped in his subsequent killing and recovery of his weapon, one AK-56 rifle. Naib Subedar Om Prakash was immediately evacuated to the Base Hospital, where he breathed his last at eight thirty P.M.

Naib Subedar Om Prakash, thus, displayed conspicuous courage, devotion to duty and spirit of self sacrifice.

G. B. PRADHAN,
Director

No. 144-Pres/94.—The President is pleased to approve the award of Sena Medal/Army Medal to the undermentioned officers/personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage:—

1. Colonel Govinda Mohan Nair, (IC-25833),
Gorkha Rifles.
2. Colonel Bhupinder Singh Ghotra (IC-25647),
Gorkha Rifles (Frontier Force)
3. Colonel Shreedharan Shyam Kumar (IC-25064),
Guards
4. Lt Col Parvinder Singh (IC-27638),
Army Aviation.
5. Major Lamoury Horace George (IC-3002),
Army Aviation
6. Major Anil Kumar Samantara (IC-43682),
Madras
7. Major Mam Raj Singh (IC-38386),
Mahar
8. Major Rajender Singh Shekhawat (IC-45191),
Raj Rifles
9. Major Hitten Sawhney (IC-48659),
Grenadiers
10. Major Oj Rajiv Reddy (IC-47729),
JAT
11. Major Upindera Singh Gill (IC-37486),
Armoured
12. Major Christopher Gregory Soares (IC-34481),
Madras
13. Major Veerendra Nangia (IC-40240),
Kumaon
14. Major Rudra Singh (IC-42473),
Assam
15. Major Rajbeer Singh Khangarot (IC-45720),
Dogra
16. Captain Rajiv Kumar Srivastava (IC-43001),
Naga
17. Captain Sudhir Kumar (IC-47623),
Para
18. Captain Amitabh Roy (IC-49511),
Garhwal Rifles

- | | |
|---|---|
| 19. Captain Ashutosh Shukla (IC-48563),
Artillery | 49. 13961495 Naib Nursing Assistant Asgar Ali,
Army Medical Corps (Posthumous) |
| 20. Captain Anit Kaura (IC-42825),
JAT | 50. 4173368 Lance Naik Mahabir Prasad, (Posthumous)
Kumaon |
| 21. Second Lieutenant Neeraj Shukla (IC-50836),
Jammu & Kashmir Rifles | 51. 2982620 Lance Naik Iyaullah, (Posthumous)
Rajput |
| 22. Second Lieutenant Rupani Basu Choudhary, (SS-
35105), Sikh Light Infantry | 52. 13682424 Lance Naik Anand Singh, (Posthumous)
Guards |
| 23. Second Lieutenant Vasudevan Narayan. (IC-51848).
Sikh | 53. 4260975 Lance Naik Devendra Prasad Singh,
Bihar (Posthumous) |
| 24. Second Lieutenant Puneet Ahuja (IC-50702),
Guards | 54. 13750163 Lance Naik Balwinder Singh,
Jammu and Kashmir Rifles |
| 25. Second Lieutenant Hardeep Singh (IC-50927),
Jammu and Kashmir Rifles | 55. 13744326 Lance Naik Chaman Lal,
Jammu and Kashmir Rifles |
| 26. Second Lieutenant Pranab Kanti Chowdhury, (IC-
52274), Army Service Corps | 56. 2673778 Lance Naik Vikram Jeet,
Grenadiers |
| 27. IC-155724 Subedar Jagdish Ram,
Dogra | 57. 13682120 Lance Naik Pushkar Singh, (Posthumous)
Guards |
| 28. IC-117177 Subedar MT Abdul Samed Kunju,
Madras | 58. 2779130 Lance Naik Shivaram Vishwanath Chaugule,
Maratha Light Infantry (Posthumous) |
| 29. IC-153537 Subedar Shamsher Singh, (Posthumous)
Engineers | 59. 2478460 Lance Naik Gurdip Singh,
Punjab |
| 30. IC-122310 Subedar Bel Bahadur Gurung,
Assam Rifles | 60. 2984580 Sepoy Shivji Ram, (Posthumous)
Rajput |
| 31. IC-183515 Subedar Avtar Singh,
Mahar | 61. 2483301 Sepoy Sukhwinder Singh,
Punjab |
| 32. IC-167314 Subedar Man Bahadur Magar,
Gorkha Rifles (Frontier Force) | 62. 13895110 Sepoy Jagmal Ram,
Army Service Corps |
| 33. IC-175474 Subedar Kul Prasad Pun,
Gorkha Rifles | 63. 3986503 Sepoy Daljit Singh Rana, (Posthumous)
Dogra |
| 34. IC-173706 Subedar Ran Singh Verma,
Signals | 64. 3991313 Sepoy Rakesh Kumar, (Posthumous)
Dogra |
| 35. IC-4161014 Naib Subedar Roop Ram Yadav,
Kumaon (Posthumous) | 65. 4269129 Sepoy Nareish Kispotta, (Posthumous)
Bihar |
| 36. NYA 1255187 Naib Subedar Jarnail Singh,
Artillery (Posthumous) | 66. 4069945 Rifleman Mohan Singh,
Garhwal Rifles |
| 37. IC-218027 Naib Subedar Dinesh Chandra,
Kumaon | 67. 13746694 Rifleman Kishori Lal,
Jammu and Kashmir Rifles |
| 38. IC-224594 Naib Subedar Dal Bahadur Rana,
Gorkha Rifles (Frontier Force) (Posthumous) | 68. 4071461 Rifleman Matbar Singh,
Garhwal Rifles |
| 39. 13732696 Havildar Abdul Rashid, (Posthumous)
Jammu & Kashmir Rifles | 69. 13750096 Rifleman Sodhir Kumar Thapa,
Jammu and Kashmir Rifles |
| 40. 2766678 Havildar Kshirsagar Mahadu Sakharani,
Maratha Light Infantry (Posthumous) | 70. 2680564 Grenadier Jagbir Singh,
Grenadiers |
| 41. 4460396 Havildar Roshan Singh,
Sikh Light Infantry | 71. 15362802 Signaller Dayanand, (Posthumous)
Signals |
| 42. 3975129 Havildar Ramesh Chand, (Posthumous)
Dogra | |
| 43. 13672789 Havildar Nishi Das, (Posthumous)
Guards | |
| 44. 14331322 Havildar Jarnail Singh,
Artillery | |
| 45. 9214417 Company Havildar Major Bhagwan Das,
Mahar | |
| 46. 2980939 Naik Rajender Singh,
Rajput | |
| 47. 2779140 Naik Wagh Bhagwan Shankar,
Maratha Light Infantry (Posthumous) | |
| 48. 5448754 Naik Mohan Singh Guung, (Posthumous)
Gorkha Rifles (Frontier Force) | |

G. B. PRADHAN,
Director

No. 145-Pres/94.—The President is pleased to approve the award of "Nao Sena Medal/Navy Medal" to the undermentioned officers/personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Commander Iwan Jyoti Varma (01819-H)
2. Lieutenant Rajiv Rawal (03282-H)

3. Lieutenant Roopan Bembey (03361-N)
4. Lieutenant Ashok Kumar Aukta (03170-B)
5. Balasubramanian Mohan LS CD II (162696-R)

G. B. PRADHAN,
Director

No. 146-Pres/94.—The President is pleased to approve the award of "Vayu Sena Medal/Air Force Medal" to the undermentioned officers/personnel for exceptional devotion to duty or courage :—

1. Wing Commander Mukesh Bhandari (13380)
Flying (Pilot)
2. Squadron Leader Kalyan Palit (15409)
Flying (Pilot)
3. Flying Officer Sanjay Malik (20501)
Flying (Pilot)

G. B. PRADHAN,
Director

New Delhi, the 8th September 1994

No. 147-Pres/94.—The following amendments approved by the President to the Table of Precedence published in this Secretariat Notification No. 33-Pres/79, dated the 26th July, 1979, are notified for general information :—

- (a) After Article 9, a new Article, namely Article 9A, shall be inserted as follows :—

"9A. Chief Election Commissioner.

Comptroller and Auditor General of India."

- (b) In article 11—

Delete the entries "Chief Election Commissioner" and "Comptroller and Auditor General of India."

G. B. PRADHAN,
Director

MINISTRY OF TEXTILES

New Delhi, the 11th August 1994

RESOLUTION

No. E-11011 (5)/90-Hindi.—In partial modification of Ministry of Textiles Resolution No. E-11011 (5)/90-Hindi, dated the 15th December, 1992, the following amendment is made :—

1. In the entry at sl. No. 2, please read Dr. (Smt.) Chander Kala Pandeya, M. P. (Rajya Sabha)

in place of Shri Shankar Dayal Singh, M. P. (Rajya Sabha).

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all State Governments and Union Territory Administrations, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Planning Commission, President's Secretariat, Comptroller and Auditor General of India, A.G.C.R. and all Ministries and Departments of the Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

B. L. SHARMA,
Jt. Secy.

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

(DEPARTMENT OF CULTURE)

New Delhi, the 8th August 1994

RESOLUTION

No. 2-6/94-Hindi.—In partial modification of Resolution No. 2-2/92-Hindi dated 04-8-93 regarding reconstitution of Hindi Salahkar Samiti of the Department of Culture, the following amendments/additions are made :

- (1) At serial No. 5, the name of Shri Ish Dutt Yadav, Member of Parliament (Rajya Sabha) shall be substituted in place of Smt. Veena Verma.
- (2) At Serial No. 30, the name of Dy. Secy. (Hindi) who will be Member-Secretary, shall be substituted in place of Director (Admn).

ORDER

ORDERED that a copy of this resolution be communicated to all the members of the Committee, all State Government and Union Territory Administrations, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Ministry of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, President's Secretariat, Committee of Parliament on Official Language, Comptroller and Auditor-General of India and all the Ministries/Departments of the Government of India.

ORDERED also that the resolution be published in the Gazette of India for general information.

ASHOK VAJPAYI,
Jt. Secy.

MINISTRY OF WATER RESOURCES

New Delhi, the 25th July 1994

RESOLUTION

No. 2/4/91-Hindi.—Government of India, Ministry of Water Resources has, hereby, decided to add the following in this Ministry's Resolution of even No. dated 28-9-1992 in para 15 i.e., Evaluation Committee at Sl. no. 2 regarding Award Scheme to encourage the writing of books originally in Hindi on subjects related to irrigation :

In para 15 at Sl. no. 2, it may be "Shri R. S. Gupta, Non-official Member, Hindi Salahkar, Samiti, Ministry

of Water Resources—Member” and subsequent sl. nos. may also be changed accordingly.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution may be communicated to all state Governments and Union Territory Administrations, President's Secretariat, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha

Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Comptroller and Auditor General of India and all Ministries/Departments of Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. SURYANARAYANAN,
Commissioner (PP)